करने लगा अरु यह कहता है के विचित्र शाह तुम्हारे पांव
में खोवा नही लगा मेरे कलेजे में लगा है इस का दरद
तुम्हारे पांव में नहीं मेरे कलेजे में है तब विचित्र शाह ने
कहा कि शाहजादे कोई कपडा होय तो इस कें बांध लें
तब शाहजादे ने अपने सिर का पेच खोलिकर अपने ही
हाथ से उस का पांव बांध दिया जब पूछता है के शाह
जादे दरद तो नाहिं है अब अच्छा हो जायगा तब वहां से
दोनों सकस सवार होय कैं चले तब रस्ते में शाह जा-
दा विचित्र शाह से पूछता है के तुम्हारा डेरा किसतर
फ है तब इसने कही शाहजादे पना हमारा डेरा इस ही
दिल्ली शाहर में मसूर है तुम नहीं जानते हो जब शाह
जादे ने कही नहीं जानते हैं तब कही हमारा डेरा पांडून
की सराय में है। तब शाहजादे ने कही हां साहब पांडून
की सराय की एक गूजरी भी आई थी सो वह कोई अजब
सराय है तब विचित्र शाह ने कही शाहजादे वह गूजरी तो
हमारे महल के नीचे रहती है। जब शाहजादे ने विचित्र शा
ह से कही के देखो तो खुदा ने इस गूजरी पै क्या महर कीनी
है कैसा उसको हुस्न दीना है उसकी सिकल दिल में से न
हीं टरती है सो आज तुमसे मुलाकात हुई आज तो हमा
रे डेरा तुम आये काल तुम्हारे डेरे ही आवैगे हम इतनी
कहै दोनों सकस गुरबत करते चले आये तब रमनशा
ह कहता है + कवित्त + खोवा तो तुम्हारें लगा दाग मेरे दि
ल बीच याद के करते बार बार पछिताउंगा॥ अच्छे तो
खिलाड मैं ने देखे हो सिकार ही के पांडून की सराय में तु

म्हारे पास आऊंगा ॥ आवोगे हमारे पास मिलेंगे हुलास
सेती खासा खुस घोड़ी कुछ खासा ही दिखलाऊंगा ॥ कहता है
चित्र शाह रमन शाहजादे सेती करूं मुलाकात और
गूजरी मिलाऊंगा ॥ २५ ॥ किस्सा ॥ इतनी कहि दोनों सवा
र दिल्ली के नजदीक पहुंचे तब चित्र कुंवर ने अपने
दिल में विचारी कि यह मूरख ऐसा मोमन लट्टू हो रहा है
जो स्याइत यह मेरे साथ ही चला चलेगा तो मेरा परदा
फांस हो जायगा जिसे कुछ भुलावा देना चाहिये तो अ
च्छी बात है जब शहर नजदीक आया तब याने शाहजादे
से कहा कि देखें शाहजादे तुम्हारे घोड़े में कैसा जोर है तब
शाहजादे ने घोड़ा दौड़ाया तब याने कही खूब जोर है इतने
में शहर और भी नजदीक आया तब इसने कही शाहजादे
मेरा घोड़े का भी जोर देखो जब शाहजादे ने कही अच्छी बात
है तब शाहजादा तो देखता ही रहा अरु इसने घोड़ा दौड़ाया
तब दरवाजे में गया अपने महल में दाखिल हो गया ॥
जब मरदानी पोशाख तो उतार धरी अरु जनानी पोशाख
पहर लीनी और घोड़ा पोशाख नाजर के हाथ रवाना की
नी जहां की तहां पहुंची और शाहजादा इसको बाहर में देख
ता देखता परेसान हो के छबीली के डेरा जाय दाखिल हु
आ। जब छबीली ने कहा आइये शाहजादे पानी लाऊं मुंह
धो डालो ॥ और आप का चहरा क्यौं उदास है तब शाहजा
दे ने कहा छबीली वो जवान हमसे घोड़ा आगे दौड़ा के कहीं
शहर में चला गया सो न तो उसने सीख मागी न कछू कही
तब छबीली ने कहा ऐसे ही काल फेर आता है ऐसी उदासी

किस वास्ते लाते हो जब शाहजादे ने कही छबीली यो अच्छा
जो यह पांच से रुपये रोज मांगे तो मैं इसको देने वाला हूं।
मेरा तो दिल उसी मे है तब छबीली ने कहा शाहजादे इन
दिनों आप का दिल कुछ ऐसा हो गया है कि कोई आदमी
वा औरत को देखते ही सौख करते हो अच्छा जिसे आप
रक्खोगे जो तुम्हारे पास रुपेया होंगे तो वहुतेरे खातिर क
रेंगे जब इतने में घरी एक दिन बाकी रहा जब शाहजादा
महल को सवार हुआ तब दरवाजे पर आया तभी जेब
में से पट्टी निकाल आंखों से बांधी तब नाजर आया सो
हाथ पकरिके शाहजादे को रहायस पलंग पे पौढा आया
जब इतने में विचित्र कुवरि सोलह सिंगार कर हाथों में ख
स वो लगा शाहजादे के पास हाजिर हुई। तब खड़े खड़े
घडी चार हुई तब याने अपने दिल में विचारी कि मूरख
अब हूं कुछ नहीं समझा तब याने कही शाहजादे मैं कहां
सोऊं जब शाहजादे ने कहा पांइत पर रहो तब पांइत ही
सो रही फिर शाहजादे ने अपने चित्त में विचारा कि यह
अपने जी में ऐसा कहैगी कि शाहजादा तो चुपका सोवै
है आंखें दुखने का यह झूठा बाहना करै है जिस से कुछ
आप आप भी करैं जब शाहजादे ने कही आय आय मेरी
आंखि दुखती है तब उधर से विचित्र कुवारि बोली कि
आय आहि मेरा पांव दुखता है तब शाहजादा पलंग पर
बैठा हो गया अरु गुस्सा कर कहा कि क्यों वे हरामजादी ने
रा पांव किस तरह दुखता है कै तो तेरा पांव गलीचे पै रहे
कै पलंग पर रहता है तेरा पांव किस तरह दुखता है॥

जब विचित्र कुवरि ने कही तुम्हारी आंखि किस तरह से दुखती हैं जिस को मुद्दत बीत गई अरु आप हरोज सिकार खेलने जाते हो सो वहां दुखती आखें से किस तरह चला जाता होगा। तब शाहजादा हंसि दिया। और कहा कि भलाजी तुम अपने पांव की हकीकत कहो तुम्हारा पांव किस तरह दुखता है तब याने कही मेरा पांव इस तरह से दुखता है कै तुम्हारे साथ सिकार खेलने गई थी कवित्त ॥ खेलने सिकार मैं तो गई शाहजादे साथ खुली हुई आंखि खूबी देखी है जवान की ॥ उकाव लुकाव में मुकाम नांही नैक वार गलागर चोट करी करी कमान की ॥ दूत खोवा लगा पांव उत जिय रहा जाय चूकी नहीं धाई उनमारा मृगा बान की ॥ कहता है विचित्र शाह रमन शाहजादे जीसे तेरी दूखें आंखि मेरा पांव दूखै मान की किस्सा। तब विचित्र कुवरि ने कही कै सुनो शाहजादे पांव दुखने की यह हकीकत है ॥ और मैं ही गूजरी हूं जो सराय में तुम्हारे पास गई थी फेर और भी कुछ कहती हूं आप सुनिये ॥ कवित्त ॥ कितेक वहाने करि पहुंची हूं तुम्हारे पास लाज छांडि छाडि कैई वार समझाया है हो रहा खराव यारी कीना भटियारी संग अंग भंग करि सब जोबन गमाया है ॥ अब हूं तू चेत कै दिवाने दीदे खोलि देखि पांडुल की सराय में विचित्र शाह पाया है। इसही वेकूफी से किया चाहै पातशाही शाहजादे साहब सहूर पेच खाया है ॥ किस्सा ॥ इतनी सुनि शाहजादे ने कहा तु ही मेरे साथ शिकार खेलने गई थी तब याने कही जी हां

शाहजादे मैं ही गई थी अरु मैं हीं गुजरी होके आपको द
ही खिलाया मेरी हहेडी का मोल नहीं आया है जब शाहजा
दे को चेत हुआ तब पूछी गुजरी भी वन कें तु ही गई थी त
ब शाहजादे ने कही मेरी तुरु पर। निसानी है तब याने कही
शाहजादे पना हाजिर है जब कही लाओ तो देखूं तब मो
तीन की माला अरु जडाऊ पहुंची उतारि तुमने मेरे हवा
लैं कीनी थे तुम्हारी निसानी है जब बंधी आंखैं से माला
के हाने टटोरने लगा। और दिल में कहा कि माला तो मेरी
सी मालूम पडती है तब याने कही एक बेर आंखें खोल
कें देखो अरु माला पहुंची को देखलो मेरी तरफ मत देखो
अपनी है कै किसी और की है तब उस की तरफ तो पीठि
कीनी अरु माला देखने को आंख खोलने लगा और मन
में विचारी कि एक कही आंख खोल माला देखूं जब एक सं
सने लगा तब फेर आंखि दाब लीनी अरु यह विचार ने
लगा कि जो मैं आखि खोलूं और स्यायत मेरी आंखि फूट
जाय तो मैं पातशाही से जाऊंगा जब मुझे पातशाहि त को
न करने देगा। तब माला तो हाथ में लीनी अरु आंखि खो
लिने को हिम्मत नहीं पडे फेर जब विचारी के भला एक
तो खोलि देखूं जो एक फूटेगी तो एक तो रहेगी तब हि
म्मत बांधि कैं एक आंखि खोली अरु माला पहुंची देखि
तब चित्र कुवरि तरफ़ देखा तब तो देख कैं बहुत खुस
हुआ अरु दोनों खोल कर दोनो की एक नजर हुई तब श
ने पलंग पर दोनों जाय बैठे तो चित्र कुवरि की कैसी
शोभा बनी है। कवित्त ॥ मानों महताब नाव धरी है कटोर पे

आनि सेज हूं तो सो है सो तो प्राप्ति हूतें आगरी। कामकी है वेलीसी नवेली मन मोहिनी सी सोहनी सी सूरत सलोनी प्रीति सागरी॥ बड़ेन छकी विचित्र महा बड़ी बुद्धि खड़ेई पुनीन सो तो बड़ेई सुभागरी॥ पांव बांधि चीर सों अदांह भग नयनी कीसी आंखि खोलि देखै तो दियासी दियें नागरी॥ किस्सा॥ जब देखि कें शाहजादा इस के पास जाने लगा तब याने करारा निकाल कें शाहजादे को दिखलाया जब शाहजादा देखि कें करारा दूर ही खड़ा रहा॥ तब कहा के ये क्या है जब विचित्र कुवरि ने कही कै सुनौ शाहजादे औरत तो तुम्हारी हूं जो तुम मुझ से ज़ोरी किया चाही तो मैं अपने पेट में करारी मारूंगी जिस्से न तो मेरे दिल की मुराद हासिल होगी न तुम्हारे दिल की मुराद हासिल होगी तिस्से एक मेरा जवाब सुनि लीजिये इतना सुनि के शाहज़ादा अपने पलंग पर जाय बैठा जब विचित्र कुवरि अरज़ करती है॥ कवित्त॥ करती हूं अरज औरदरद मेरे दिल बीच वरजे न रहूं जो तो गरजे न सारि हों मेरी तो फिराद एक यही शाहज़ादे जी से न्याव न करोगे तो नगा सी तोरि डारि हौं॥ करती हूं कौल जो दुहाई मनसिंह जूकी बरा ज़ोरी करोगे तो करारी पेट मारिहों॥ मेरा और साहब का मिलना तो जभी होय तब यहा विसासनि कों त्रासन दै मारि हों॥ किस्सा॥ इतनी वात सुनि कें शाहज़ादा बहुत गिरफ़्तार हुआ और दिल में कहने लगा कि खुदा जल्दी फ़जर करि देतो बड़ी बात है तब पलंग पर सो गया और पड़ा२ देखा किया सब राति आंखि न ही लगी जब फ़जर

कावखत हुआ तब अपनी रहायस से बाहर आया जब
हजूर के नौकर अरु खिजमत गार सब हाजिर हुए तब
शहजादे ने फरमाया कै बिछाइत करो आज हम दरबा
र करैंगे तब बिछाइत हुई तब हजूर पै खबरि करी के
शाहजादे पना बिछाइत तैय्यार है दरबार कीजिये। तब
महल से निकल कै आम खास में तख्त पर आ बैठा जब
सब अमीर उमराव शहर के भले मानस सबको बडी
खुशी हुई कै शहजादा आज कुछ होस में आया है औ
र दरबार भी किया है और जितने दरबार के लोग थे स
ब हाजिर हुए तब शहजादे नैं फरमाया कै उस सरा
य में छबीली भटियारी रहती है सो उस को पकड लाओ
जब बहुत से आदमी दौड कर पकड लाये तब छबीली प
स आने लगी तब शहजादे ने फरमाया कै दूर ही रक्खो।
थे नजदीक नहीं आने पावै तब इस को दूर खडी रक्खी। तब
शहजादेने कहा॰ कवित्त॰ क्यों वे कुलीकपट किया नैनेन
लास बारि द्रोह बोलि बोलि साहिबी सब लई है। छबनेरी
कैसी बात मौत है उसी के हाथ रानी चौडहेरे कीसे बंदी
बांधि दई दई है॥ पूछता हूं तुझै तू जवाब दे मुझै तेरे ताले
बीच लिखी थी अब जोई भई आई है॰ बैठि पर तख्त पर
बख्त बिलंद शाहजादे भटियारी न्यारी करि दई दई है॰
किस्सा॥ इतनी कही हजरत के सलाहगीरों से कि इस रंडी
का बध कीजिये तब सलाहगीरों ने यह सलाह दीनी
कि शहजादे साहब इस को शहर से बाहर निकाल दी
जै तब भटियारी हाथ जोरि कहती है कै शहजादे एक अरज

मेरी भी सुनि लीजिये। आप जो चाहोगे सो तो करोगे तव
सवोंनें अरज कीनी कें इस की भी अरज सुनि लीजि
ये तव भटियारी कहती है॥ कवित॥ जाहरी जहूर म
ह सूर में गुनाह किया पोसती की निसानी फल तोरि
लिया डार सें॥ मैं तो चारि याई घर करम कुमाई कीनी छ
डि कें इमान दगा बाजी कीनी यार सें॥ जोई मन आवै
सोई दीजिये सजाह मोहि मैं तो पाप भरी मरी आपही
के भार सें॥ दोउ कर जोरि कें कुनस भटियारी ठाडी
साहिबी में कीनी तौ लौं साहिब के प्यार सै॥ किस्सा॥
इतनी अरज भटियारी ने कीनी है तव कुछ तो शाहजादे
के दिल में आई कुछ नही भी आई। तव वहां चित्र कुव
रि के जो एक आदमी तखत के नजदीक खडे थे। तव जो
कुछ जवाव सवाल मुसाहिवोंने किया सो सव सुन कें
चित्रकुंवरि से जाहर कीनी कै रानीजी साहिव सला
मीरां ने ये सलाह दीनी है जव उससे यह फरमाया कि
शाहजादे से यह कहो कै जिस तरह से पाने मेरे खांव
द की देह से देह चिपकाई है उसी तरह से गरम खंभ
कर इसको चिपकाइये। फेर जमीन में आधी गाड ऊपर से
शाहजादा उस के सिर में तीरों की चोट करें तो मेरा जीव
ठंढा होय॥ जो यह नहीं करें तो मेरा मरना कबूल करें
जव नाजर ने शाहजादे से अरज कीनी कि शाहजादे कै
नी इस भटियारी का यह हवाल करो नही तो उसका मर
ना कबूल करो॥ जव शाहजादे ने फरमाया कि जिस तर
ह वे कहती हैं सोई हवाल इस रंडी का कराते हैं तव हीम

रने लगे॥ कवित्त॥ खंभ तत्त्व वाय विपकाइ अंग तंग किया जिनी में गढाय नीर बेधे सुख या जिनी ॥ और अरगजा सानी चोली सो धे संग बगे वार हार उर छाय रहे सदं सुख साजिनी ॥ ताकौ तन तनक पैतराइ लीनौ ऐसो बैर लीनौ तब रानी भई राजिनी ॥ रैन रमनीक भई दिल की जी पीर गई आल ही पकरि कैं भर बाई दग़ा बाजिनी ॥ किस्सा ॥ तब छबीली भटियारी का तो यह हवाल हुआ अरु शाहजादा कहने लगा कि खुदा जलदी से शाम करै तो जाय के इकट्ठे होइ आखिर शाम तक शहज़ादे पर नहीं रहा गया जो दरबार के भले मानस थे तिन को तो रुख़सद कीनी और उठि कें महल में दाखिल हुआ जब इधर से तो वही खुशी से शाहज़ादा अपनी रहायस में गया और उधर से बहुत खुशी से विचित्र कुवरि आई दो[illegible] जब नजर मिली तब दोनों हंसि कें गलबाही लेकें एक ही पलंग पर जाय बैठे जब मिल गये हैं तब दूर होंने को दिल नहीं करता ॥ कवित्त ॥ ऐसें मिले दोउ जैसे कागरी विछोह हिरन ऐसें मिले दोउ जैसे गुदरी में ताग सौं ॥ ऐसें मिले दोउ जैसें पानी में पय मिले ऐसें मिले दोउ जैसें गवईया रंग रागसौं ॥ ऐसें मिले दोउ जैसे फूल बीच बास मिलै ऐसे मिले जैसें बास सें पर[illegible] सौं ॥ ऐसें मिले दोउ जैसें रैन रमनीक भई ऐसें [illegible] जैसें सोंने में सुहाग सौं ॥ किस्सा ॥ तब [illegible] ले हुए बैठे जब एक घरी गुजरी तो [illegible] हो गया और विचित्र कु[illegible] [illegible]

जब शाहजादे ने पलंग पर लिटाय दीनी और आपभी
ऐश आराम में सोया॥ कवित्त॥ सुंदर सरस अति दंप
ति करत सुख गीत धुनि भाखत हैं वचन हरू वरी॥
प्रेम की कलानि में प्रसिद्ध दोउ ऐसे मिले भिले रसरीति
प्रीति रची अति संचरी॥ कंचुकी कसुम साजि दूरिधरी
स्रवीर तरज उतंग भारी भिरे युत रूवरू॥ सुरत सम
र मानों जीति कै किसान ऐसें मंद मंद बाजत हैं पायन
के घुंघरू॥ २॥ किस्सा॥ जब इसी तरह से सारी
राति रंग ही में गुजरी तब फजर हुआ तभी सब दर
बार के आदमीयों ने यह खबर सुनते ही बहुत खुशी
हासिल हुई सब को और बधाई बंटी कि शाहजादा
साहब अब होश में आया अपनी पातशाही का का
रबार करने लगा बहुत खुशी के साथ॥ ॥ ॥

---

इति सिकंदर शाह पातशाह के शाहजादे रत
नशाह वा विचित्र कुवर वा छबीला
का किस्सा संपूर्णम् संव
त १९२२ के
अंत मे

गाने का
हीर रांझा
रांझा
हीर
گانے کا ہیر رانجھہ
मतबअ मुम्बे उल उलूम
मथुरा में मुंशी कन्हैया
लाल के छपा
دفعہ دوم ایکہزار جلد در مطبع منبع العلوم ضلع متھرا باہتمام منشی کنہیا لعل متھو مالک مطبع کے طبع ہوا

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथहीर रांझा ॥

एकदिन सोवती हीरो वो खसकेरी बंगला ॥ सपने-
देखती लडकी रांझे के तांई ॥ दिल मह डूब है गबरू
सूरत तेरी खूबहै ॥ महीं चरामता लडका जंगल के
मांही ॥ २ ॥ सात सहेलरी हीरो आपअ केलरी ॥ दिल
नहीं लागता लडकी घरों के मांहीं ॥ ३ ॥ जो सुपदेख
ताहीरो स्वपन के वीचमें ॥ जागपरे तेरी लडकीरीषता
नाहीं ॥ ४ ॥ जबचुप होगई वीवी गया दिलभूलिजब ॥
सखीसहेलरी वीवी दिलों अकुलाई ॥ ५ ॥ एक सहेल
री वीवी गई है महलमें ॥ खबरि करीहैरी लडकीअंमा
केतांई ॥ ६ ॥ जोरूं हाथरी अंमा करूं एक बीनती ॥ अ-
रजगरी वीरी अंमा दिलों पर आई ॥ ७ ॥ आधीरात सूं अं
मा वा हीर निमानी कूं ॥ क्या जानूं क्या हुआ अंमा जरा
सुधि नाहीं ॥ ८ ॥ पलकन खोलती अंमा नैनो नहीं देख
ती ॥ मुखनहीं बोलती अंमा किसी के तांई ॥ ९ ॥ चौंकिप
रतिहै लडकी विरह रसभरतहै ॥ हाइ हाइ करतिहै ही
रो एकदम लाई ॥ १० ॥ अन्न न खावती लडकी जलनहीं
पीवती ॥ दिलनहीं लागता हीरो घरों के मांहीं ॥ ११ ॥ इत
नी सुनतही लडकी चली भौजाइयां ॥ आइ दिल बूझती
लडकी बंगले के मांहीं ॥ १२ ॥ अंचल खोलती भाभी नब्
ज टटोरती ॥ मुखनहीं बोलती हीरो नूं मेरे तांई ॥ १३ ॥ क्या
दिलदा बिगया वीवी ख्वाब तेने देखिया ॥ कौनें सताई री-
लडकी परी के तांई ॥ १४ ॥ नैन उनींदियां वीवी बिरहरस
भीजियां ॥ जब दिल देपती वस्ती जदै जियली जियां ॥ १५ ॥
रैन अंध्यारियां वीवी जोबनरस वालियां ॥ विरहमतवालि

यां हीरो सेजों के मांहीं ॥१६॥ सब दिन जागती लडकी व
डी ही फ़जर ही ॥ आज न जागती बीबी पहर दिन आई ॥
१७॥ मुख नहीं बोलती बीबी आंषि नहीं खोलती ॥ बो हु-
त निहोर ली हीरो तेरी भौजाई ॥१८॥ बैद बुलाउंगी बीबी
नवज में दिखलाउंगी ॥ औखद प्याउंगी हीरो मैं तेरे ताईं ॥
॥१९॥ एक फकीर री बीबी तपै साडे बाग में ॥ मनों दूलाई
री हीरो मके सें आई ॥२०॥ उसी फकीर कूं अबनों जलख़ु
लाइलै ॥ खबर करौ क्यौंना इस के पटमल भाई ॥२१॥-
एक दौ सैर कें लडका गए उस बाग में ॥ जलद चलो क्यौं
ना साईं महल के माहीं ॥ बारह बरस का बच्चा परण हुं-
विसरा ॥ कदम नग धारे बस्ती घरों के मांहीं ॥२३॥ जिन
घर छोडारे लड के फकीर ने आपना ॥ सो क्यौं जावु गा-
बाबा परण ताईं ॥२४॥ जबही उलटि के लडका गया म-
हमहल मैं ॥ खबरि कराइदी बस्ती भाभी के ताईं ॥२५॥
अरज नहिं मानना फ़कड़ बो घर नहिं आमना ॥ मरमन
जानना बाबा किसी के ताईं ॥२६॥ जब लिख भेजती भा
भी बो पटमल भाई कूं ॥ हीर निमानी कूं साहब जरा सुधि
नांहीं ॥२७॥ मुख नहीं बोलती हीरो पलक न हीं षोलती ॥
पास पलंग के रो बैठ खडी भौजाई ॥२८॥ लै क्यौंना जाव ला
गबरू नौ लखा बाग में ॥ फकड़ तपै हैरे बस्ती सह गज
बइला ही ॥२९॥ रंग चंडोल में भाभी भई असवार जब ॥
गोद लुटा लई जिंदरी परी के ताईं ॥३०॥ केस संभारती-
भाभी बो मुख पुचकारती ॥ फिर उरलावती भाभी गले के
ताईं ॥३१॥ मू जिंद मेरी री हीरो बिरह मति बालियां ॥ क्यौं क-
रि जांदगी बीबी मैं चित्तर सारी ॥३२॥ जबही पहुंची री भा-

भी फ़कड़ दरबार मे ॥ सात सलामरी कीनी फकड़ केनं
ई ॥ ३३॥ अरज करूं हूं जी फ़कड सुनो एक वीनती ॥ जिं
द व कसाइ दै बावा हीर के तांई ॥ ३४॥ पानी पह प्याइ थौ
फ़कड़ अभूतिलगा इथौ ॥ किरह दिमानी सूं फकड जरा
बतलाई ॥ ३५॥ इशक के फंदमें बची इक्या दिल जाइ कें
॥ किसी सकसनें लडकी का चित्त चुराई ॥ ३६॥ जहां दि-
ल दविगया बची दवा सोई देंउगा ॥ यही अकीसतो फक
ड़ देलते रेलांई ॥ ३७॥ जब फिरि देखी री हीरों नें करखत तब
लई ॥ पासमें बैठी है हीरो अंमा मौजाई ॥ ३८॥ तुमउठी बैठ
री भाभी जराह्यां दूरसी ॥ अरज करूं शीरी भाभी फकड केवां
ई ॥ ३९॥ सुखबुलवायसूं बीबी खांनामें खवायरूं ॥ पानी पि-
वायरूं अंमा खुसी घर जाई ॥ ४०॥ हंसिहीरो कहै फकड़
सुनों एक वीनती ॥ यही मुराद तौ बावा में तुमसें पाई ॥ ४
१॥ हमें मिलाइ देरे फकड़ उसी महबूबसें ॥ जिस आश
क नेरे बाबा यह करद चलाई ॥ ४२॥ वडे पठान की बी-
बी अब तुम बेटियां ॥ खोग हंसेंगे री बीबी तेरे पटमलुभा
ई ॥ ४३॥ क्वारी होइ तो हीरो मगनीं करवाइ दूं ॥ व्याहे
पीछें री व ह्चीनू भई है पराई ॥ ४४॥ वडे सुसर की री ही
रो नू बहू कहावती ॥ व्याह किया है री बची कलूके तांई
॥ ४५॥ आठ खेरों कारी हीरो कलूपात साहि है ॥ बेगम
होइगी बची चलो घर जाई ॥ ४६॥ व्याह की होंयमा खब
वाउसी महबूबसें ॥ कलू की होइगा बाबा सगा मेरा भाई
॥ ४७॥ सब घर वहूरी हीरो सबे घर बेटियां ॥ भाजबद
लाई री हीरो कहांतें आई ॥ ४८॥ जो मांगेगा रे फ़कड़
सोई में देउंगी ॥ मुजे मिलाइ दे रे बावा उस गबरू के ता

ई॥ ४९॥ नामनजानूंरी हीरेनगरनहींजानता॥ क-
हांतेलांउरी बच्ची उसी के तांई॥ ५०॥ जोबनवाला है ग
बरूअजनमतवाला है॥ मही चरामता गबरूजंगलके
मांहीं॥ ५१॥ जंगसियाले का गबरूरांझा पानसाहे हे
उसे मिलाइदे फक्कड़ तू मेरे तांई॥ ५२॥ बारह बरसकी
री बीबी परा छ्यां चिस्तरा॥ पंछी व्यागरा बच्ची इस
गुदरी मांहीं॥ ५३॥ सुनै मिलाइदे बाबा उसी महबूबसे॥
गाइसरा शृंगी बाबा मैं तेरे तांई॥ ५४॥ आमिलगे गीरे फ
कड़ सुनैलेरे गूरूरा॥ लाखबुझावैगा रे बाबा बुझैगा ना
ई॥ ५५॥ जहां भेजेगी री हीरो जहां मैं जाऊंगा॥ जैआवे
गारी बच्ची उसे ले आऊं॥ ५६॥ क्या नपिआई री हीरो म-
के मैदानमें॥ क्या मिलिआई री बच्ची खुदा के तांई॥ ५७॥
जोजानेगा रे फक्कड़ हीरो की दोसती॥ खबर परैगी रे फ़-
कड़ अबतेरे तांई॥ ५८॥ रात्ति अंधेरी रे फक्कड़ बैठा वह-
चिस्तरा॥ आमिलगी है रे फक्कड़ गुदरी के मांहीं॥ ५९॥
हाथमले है रे फक्कड़ पावों से मीडता॥ लगी बुझामता फ़-
कड़ वो बुझती नाहीं॥ ६०॥ मैं उठि जाउंगा लड़की बड़ी दूर
फ़ज़रकूं॥ बेगि बुझाइदे हीरो लगी के तांई॥ ६१॥ गूदर
जलगया बीबी भसम सब होगया॥ फिर दिखलादिया
हीरो उसी के तांई॥ ६२॥ अजमत देखि के फ़क्कड़ तबी ब
ह झुक रहा॥ मनों इलाई री हीरो उतरि करि आई॥ ६३॥
बहुत दिनातेरे फक्कड़ करी तेरी दिलबरी॥ एक न लाव-
ना रे फक्कड़ दिलों के मांहीं॥ ६४॥ मेरा दिल फस गया रे-
बाबा इश्क के फंदमें॥ मैं सुलझांवती बाबा सुलझता ना
हीं॥ ६५॥ लगगई लगन रे फक्कड़ मो लामेरा जानता॥ म-

रमरम नजानता वावा वंदी का कोई ॥ ६६ ॥ काढिकरेजा
रे वावा तवी वह लेगया ॥ खालु परी है रे वावा महलके मां
हीं ॥ ६७ ॥ जो फुरमावैरी हीरो सोई सानू सिर धरी ॥ जहां
षदावेरी वीवी फ़ज़र उठि जाऊं ॥ ६८ ॥ अव तूं जावे रे फक्क
ड जंग सियाले कूं ॥ ह्यां लेआउ रे वावा रांझे के ताईं ॥ ६९ ॥
क्या रांझा है री वीवी फकड की फेंटमें ॥ खोल्हि दिखाउं री
हीरो में तेरे ताईं ॥ ७० ॥ फेटवडी है रे फक्कड रांझा तेरी नज
रमें जो दिल चाहै रे वावा तुरत दिखलाई ॥ ७१ ॥ करीफकी
रीरे वावा रह्या तूं गाफिली ॥ इष्क नलाया रे वावा खुदाके
ताई ॥ ७२ ॥ कन रूंना देखारी वच्ची झाजंग सियाले कूं ॥ नाम
नजानता वच्ची रांझे के ताईं ॥ ७३ ॥ वारह वरष तो हीरो रहा
एक ठोर पै ॥ धरती पावनो वच्ची धरा में नाहीं ॥ ७४ ॥ तेरे हु
कमसे री हीरो कहै जहां जाउंगा ॥ सौगंद खाउरी वच्ची खु
दा के ताईं ॥ ७५ ॥ दस्त धरै क्यों नां रे वावा तूं सांडें सीसपै ॥ सौं
गद षाइ जारे फक्कड मेरे गल ताईं ॥ ७६ ॥ सौंगंद खाउरी
हीरो तुमारे सीस की ॥ कसर करूं तो री हीरो मुझे खुदा सम
फाई ॥ ७७ ॥ कौन असवाव सूं रे फक्कड चले उस देस कूं ॥ ॥
कौंन तैयारी सूं वाना मिलै उसै जाई ॥ ७८ ॥ एक लाषकी रे
वावा वनाइदें उंगूदरी ॥ प्याला वनायदूं रे फक्कड में रतनज
डाऊ ॥ हाथी मगवाइदूं रे वावा घोडा मंगवाइ दूं ॥ पाल
की मंगवायदूं फक्कड में चढने के तांई ॥ ८० ॥ खरच वध
वाइदूं फक्कड सलीने लदवायदूं ॥ वनजारा लदवायदूं फक्क
ड में तेरे ताईं ॥ ८१ ॥ एक रूमाल री वीवी फकड के हात में
एक पियाला री हीरो लेउं जल लताई ॥ ८२ ॥ तसवी हाथ में
वीवी कफनी गात में असुरति लगाई रे वावा मालिक के ताईं

॥८३॥ अवहं सि सीखदै हीरो चलूं उस देसकूं ॥ सुर निवताइदे वीवी दिसाके ताईं ॥८५॥ पेड खिजूर कारे वावा नौलखा वागमें ॥ देस हिवारे की लडकी नें सुरतिवनाई ॥८४॥ वारह वरष की लडकी मुजे तू सीख दै ॥ दोस दिना मेंरी वीवी वगदि घरि आई ॥८६॥ वारह वरस नौ वावा जोगी जन जीवता ॥ वरस दिना नौरे फ़क्कड़ जिऊं कै नाहीं ॥८७॥ मास एक मेरे वावा पहुंच उस देसमें ॥ वरष दिनामेरे वावा वगदि घर आई ॥८८॥ राति दिन वसियौरे फक्कड परीके देसमें ॥ नातर लैजाउगी वावा सूर सें देही ॥९०॥ समझ परीते रे फक्कड सांडी है दोसती ॥ भीर परै तोरे वावा कहियो समुझाई ॥९१॥ खाना मति खाइयो फक्कड पानी मति पीजियो ॥ रैन वसेरा रे वावा कीजियो नाहीं ॥९१॥ सहर सियाले कूं फ़क्कड नवीवहउठ चला ॥ जंगसियाले कूं वावा में सुरति डराई ॥९२॥ क्या कुछ देयगी हीरो आशिक की नजर कूं ॥ जो दिल माने गा वीवी मेरी सचि आई ॥९३॥ दिल दौलत कूं रे वावा विसी दिन लेगया ॥ ह्यां तौ रहि गई वावा ये खाल निमानी ॥९४ एक तसवीर री हीरो दई है आपनी ॥ जौ दिल चाहै तौ फक्कड रक्खो दिखलाई ॥९५॥ चल्ला फकीर री वीवी उडै जैसे पौन जौं ॥ करम नलावता वावा धरनि के मांहीं ॥९६॥ दिन नहिं खावता फ़क्कड़ रात नहिं सोवता चलाजा है रे वावा कासद की नाहीं ॥ एक पनिहारी रे वावा मिली है तालपै ॥ देषि फकीर कूं तिरिया रही है लुभ्याई ॥९८॥ कौन दिसा तेरे फ़कड चला तू आवना ॥

॥ कौंन दिसा कूं रे बाबां तें सुरत्ति उठाई ॥ १९ ॥ सहरसि-
याले सें बीबी चला में आवता ॥ जंग सियाले कूं बीबी-
में सुरति उठाई ॥ २० ॥ जो चहिये तौ रे फकड सोई हा-
जिर करूं ॥ तकिया चिनाय दूं बाबा मे तेरे ताई ॥ १ ॥ त-
न तकिया तौ री बीबी सदा हाजिर है ॥ जिसमें रमिर-
हा बीबी वो अजब इलाई ॥ २ ॥ जो दरकार है बीबी सो
ई तूं मांगि ले ॥ बो फिर जाउंगा बीबी मिलूंगा नाहीं ॥
॥ ३ ॥ तुरीय तुरंग तौ बाबा खुदा नें सच दिये ॥ चढने वा रे
बाबा दूसरा नाहीं ॥ ४ ॥ एक फरजंद री बीबी तेरे ताईं देउं-
गा ॥ हुकम खुदा कारी बीबी मांगि ले जाई ॥ ५ ॥ सात-
दिनां में रे फकड पौंहुंचा उस देस में ॥ खबरि भई है रे बा-
बा बस्ती के मांही ॥ ६ ॥ एक फकीर रे लोगो उतरा है जं-
गल में ॥ फजर इलाह रे बाबा मनौं चलि आई ॥ ७ ॥
बिन मांगी तौ रे बाबा मुराद देत है ॥ यह सुनि दुनियां रे
बाबा बहुत चलि आई ॥ ८ ॥ अन्न न खावता फकड
के जल नहिं पीवता ॥ नैंनौं नहिं देखता बाबा किसी के तां-
ई ॥ ९ ॥ एस बवात रे बाबा सुनी दरबार में ॥ खबर भई
है रे फकड पठानौं मांही ॥ १० ॥ अरज करूं हूं जी साहब
सुनौ मेरी बीनती ॥ हुकम होइ तौ जी साहिब फकड मि-
ल आऊं ॥ ११ ॥ क्या दरकार है तिरिया फकड पै जाइ-
गी ॥ जो मांगेगी रे तिरिया तेरे घर माहीं ॥ १२ ॥ बो हु-
त दिनां ते जी देवर दिमाना हो गया ॥ अरज करूंगी जी
साहिब फकड के तांई ॥ १३ ॥ दही जमाय ले बीबी षां-
नां पक वाय ले ॥ वैं हिंगी लद वाय ले बीबी फकड
के ताईं ॥ १४ ॥ जब हीं पहुंची री भाभी फकड दरबार में ॥

॥अरज गुजार री भाभी फकड के तांई ॥ १५॥ पंहेलैस
लामरी तिरिया करी है सिहोर कैं ॥ फिर फकड कूं भाभी
नेनजर दिखाई ॥ १६॥ अरज करूं हूं जी फकड सुनों ए-
क बीनती ॥ अरज गरीबीं री वाचा दिलौं पर आई ॥ १७
ह्यांनेउठि चलौ फकड चलौ उस बागमें ॥ डेरा कीजे रे
वावा कचेरी मांहीं ॥ १८॥ जोदरकार है बी बी सोई तू
मांगि लै ॥ काहे कौं सतावती बीबी फकड के तांई ॥ १९
मेरी मुरादतो फकड सुनौं एक बीनती ॥ रांझा दि मांना
रे वावा भला करजाई ॥ २०॥ ह्यां लै आउरी अम्मां उसी दि
माने कूं ॥ खुदा करैगा री अंमा भला हो जाई ॥ २१॥ कह्या
नहिं मानता वावा वह घर नहीं आवता ॥ निस दिन रह
ता है वावा जंगल के मांहीं ॥ २२॥ बिनखेतीरी बीबी कि
सीसे क्या कहूं ॥ नजर परैगी री बीबी वह मेरे तांई ॥ २३
जब उठि गईरी भाभी अपने महल में ॥ रैंन अंध्यारी रे वा
वा सिरों पर आई ॥ २४ ॥ जब सब दुनिया रे वावा गई घर
आपने ॥ फ़कड चला है रे बस्ती रांझे के तांई ॥ २५॥ राके
बरी का रे वावा जंगल में पैडे हे ॥ रांझा बिरमता गवरू
सीतर आई ॥ २६॥ उसी वरी तरें फकड किया है बिस्तरा ॥
ध्यान लगा दिना वावा खुदा के तांई ॥ २७॥ जो ही रे फकीरे
वावा सांची है दोसती ॥ रांझा मिलैगा बस्ती वह मेरे तांई
॥ २८॥ राति पहर तौ रे फ़कड इहां ई पर रही ॥ फजर मि
लैगा रे वावा वह तेरे तांई ॥ २९॥ चंदा छिप गया वावा वादौ
सूरज ऊगियां ॥ रांझा चला है गवरू जंगल के मांहीं ॥ ३
॥ ३०॥ मही मिला लई गवरू नें दूध दुहा लिया ॥ नजर
जुलैन चला गवरू वावा के तांई ॥ ३१॥ हाथ जोरूं रे वावा

करूं एक वीनती ॥ दरसन दीजिये वाबा नूं मेरे तांई ॥ ३२
नैंना खुलि गए रे बाबा लखे महबूब कों ॥ सुरति करी है
रे फकड रांझे के तांई ॥ ३३ ॥ घरी चार तोरे फकड
तबी वह चुप रहा ॥ फिकर परी है रे बाबा रांझे के तां
ई ॥ ३४ ॥ एक बि रह तोरे फकड जरूं उस आगि सूं ॥
दूजे जग मने बाबा कहां ते आई ॥ ३५ ॥ सब दुनियां कूं रे फ
कड मुरादें देत है ॥ मेरे तांई रे फकड तें यह दिखलाई ॥
३६ ॥ तब उठि वे ठारे फकड औड जम्हाइयां ॥ हैं खिदमत
या रे बाबा रांझे के तांई ॥ ३७ ॥ कौंन दिसान तेरे फकड
चलानूं आवता ॥ कौन दिसा कूं रे बाबा तें सुरति उठाई ३८
सहर सियाले तें गबरू चला में आवता ॥ जंग सियाले
में बच्चे मेरी किसमति लाई ॥ ३९ ॥ जो मांगेगा रे फकड
सोई मैं देउंगा ॥ हुकम करे तोरे बाबा देऊं पातसाही ॥ ४०
सातों भाई रे बाबा तेरे हाजिर रहैं ॥ पग धोमेंगी रे बाबा
सातों भौजाई ॥ ४१ ॥ थांने कूं पाइये बाबा वो पानी पीजि
ये ॥ टुकर भजो जिये फकड तूं मेरे तांई ॥ ४२ ॥ खाने
कूं खांउगा बच्चा उसी के हाथ सें ॥ हीर निमानी नें बच्चे मु
झे कसम दिवाई ॥ ४३ ॥ अन्न न खावती लडकी वो ज
लन हिं पीवती ॥ वाट निहारती गबरू वह मेरे तांई ॥ ४
४ ॥ ऐसी कौन है रे बा जिसके कारनें ॥ व्याकुल होत
है बाबा तू खान दिनाहीं ॥ ४५ ॥ बेटी कहिये रे गबरू
बकू ऊ क साल की ॥ देस परीका रे लडके वतन जि आई
॥ ४६ ॥ इतनी सुननहीं गबरू रांझा छकि रहा ॥ सुधि
सपने की रे खसी की दिल बिच आई ॥ ४७ ॥ जब दिलरो
का रे बाबा उसदो ढीमाननें ॥ नजर करी है रे बाबा में दिल

हडुलाई ॥ ४८ ॥ जो दिल देखूं रे बाबा खिलीजैसी बाद
नी ॥ वो हत कहने में रे फकड आवती नाहीं ॥ ४९ ॥ बिर
हकी बरछी रे गजब दिनी दई दिल सामही ॥ रूप दिमाना
रे बाबा फिरूं बन माहीं ॥ ५० ॥ इतनी कहि के रे गवरू वो
रांझा गिर परा ॥ मूरछा आई रे लडके वदन के मांही ॥ ५१
जब गुन गावै रे फकड़ ज़ाहीर निमानी के ॥ स्याप लहर
सी रे बाबा उत रिझ बजाई ॥ ५२ ॥ जब उठि बोला रे रांझा
फकड सें यों कही ॥ बेग मिलाइ दे बाबा परी के तांई ॥ ५३
दई तसवीर रे फकड रांझे के हाथ में ॥ देख दिमाना रे गव
रू परा मुरझाई ॥ ५४ ॥ हाथ मलै है रे फकड अपना सि
र धुनें ॥ गजब खुदा का रे गवरू कहां ते आई ॥ ५५ ॥ सां
ची होइ री हीरे रांझे से तेरी दोसती ॥ मुरछा जागरी बच्ची
रांझे के तांई ॥ ५६ ॥ रूप दखा तौ रे फकड दई जब घो
र के ॥ नेह निमानी का बस्ती ज़हर जल पिलवाई ॥ ५७
सात दिना तौ रे लडके जंगल में होगये ॥ खबरी मगा दू
रे गवरू बडी भौजाई ॥ ५८ ॥ एक भतीजा रे गवरू खड़ा
दरबार में ॥ अरज करूं हूं रे चाचे तू सुनता नाहीं ॥ ५९ ॥
सात दिना तौ रे चाचा जंगल में होगये ॥ घर क्यौं न चाल
ता चाचा कहूं तेरे तांई ॥ ६० ॥ जब कर लियौ रे गवरू रांझे
नें कोरडा ॥ चार चखा दिये गवरू भतीजे के तांई ॥ ६१ ॥
हाइ जिंद हाइ जिंद रे लडका करत घर कूं गया ॥ रोवत
आया रे गवरू महल के मांहीं ॥ ६२ ॥ खबरि भई है रे ल
डके बडी भौजाइ कूं ॥ उतरी महल तें ~~वु~~ (दुती) गिरती आई ॥ ६
३ ॥ देखि हवाल री अंमा भई है बावरी ॥ ऐसा कौंन है
रे गवरू जिन तुजे सताई ॥ ६४ ॥ खालक दाय लूं पट्टे में

भुस भर वायदूं ॥ जिभै कराय लूं लड के में उस के तांई ॥ ६५ ॥ तुम ने भेजा री अंमा चचा की खबरि कूं ॥ मुज कूं दे खि के अंमा गुसा हो आया ॥ ६६ ॥ सात दिना का रे रांझे छो डा तेरी मायनें ॥ दूध पिलाय कै बच्चे वढाया भाई ॥ ६७ रांझा हुआ री अंमा अब कहूं जांन कूं ॥ तुम ति ली जो री अंमा सिरो बुराई ॥ ६८ ॥ पास बुला लिया लडका गरें लि पटा लिया ॥ असुअन धोवती भाभी रांझे के नाई ॥ ६९ ॥ जो तुम लेउगे रांके अदल पान साहियां ॥ अरज करूंगी रे लड के तेरे सातों भाई ॥ ७० ॥ जो दिल चाहे रे लड के में वि रह सवाइयां ॥ वेहेनि विवाहि दूं लड के चचा की नाई ॥ ७१ ॥ ना मो हि चाहिये री भाभी अदल पान साहियां ॥ ज वी फ़कीर री भाभी किसी के तांई ॥ ७२ ॥ ऐसा कौन हैं रे वावा जिन रांझा वह काइयां ॥ वैरी वगल ने दुसमन क हां ते आई ॥ ७३ ॥ हुकम करो तो री भाभी चलो अब जंगल कूं ॥ म हियें फिराति हैं भाभी जंगल के मांहीं ॥ ७४ ॥ — करी सलाम वो लडके वडी भौजाइ कूं ॥ खबरि परी की रे लड के जरा सुधि नांहीं ॥ ७५ ॥ करी विदा तो रे रांझे ने जवी फ कीर की ॥ नगर अडाने में वावा वसो तुम जाई ॥ ७६ ॥ रैनि अंध्यारी रे लड के तवी व्हां ते चला ॥ खवर न पावते रांझे की लो ग लुगाई ॥ ७७ ॥ तसवी हाथ में लड के कफ नी गा त में ॥ टोपी धरी रे गवरू सीस के मांहीं ॥ ७८ ॥ सई सांझ का रे लडका उहां ते उठि चला ॥ फजर किया है रे गवरू अडाने मांहीं ॥ ७९ ॥ खबर भई है रे गवरू जो सगरे सह र में ॥ सुनि पछताय है गवरू वे सातों भाई ॥ ८० ॥ गुसा कि या है रे गवरू तवी पांत साहनें ॥ कतल करूंगा रे रंडी में ते

रेलाई ॥ ८१ ॥ देंउनर वारे रे रंडी सीस लेरा गिर पड़े ॥ मुजे
दिखाइदे रंडी रांझे के तांई ॥ ८२ ॥ अंदर धसिगई तिरि-
यां पट जब रे दिया ॥ ज्वाबनदे ति है वेगम साहिव के
तांई ॥ ८३ ॥ लाखौं घोरारि भैया भैजे चहुं ओर कूं ॥ जि
तरे खौं तौ रे भाई रांझे है ले आई ॥ ८४ ॥ रांझा सोवे हैं रे
वावा अंगूरी वाग में ॥ फकड परा है वस्ती ना किया के
माहीं ॥ ८५ ॥ वडी फजर तौ रे मालिन गई है वाग में ॥
देखि फकीर कूं मालिन रही है लुभ्याई ॥ ८६ ॥ फूल
नडा वीरे मालिन लाई है नजर कूं ॥ पान न वीरा रे-
मालिन लाई है वनाई ॥ ८७ ॥ मोहरे लाई रे फकड
दई है डाली में ॥ हंसि मुसिकाय रे फकड मालन के-
तांई ॥ ८८ ॥ उठि कौना वैठ रे वावा पड़ा यहां क्या क-
रै ॥ मुजे पौहुचाइ दै फकड सियाले ताहीं ॥ ८९ ॥ ए
क एक कोस पै हीरो वसें भटिया रियां ॥ कोस पाउ पै-
लड की सबील लगाई ॥ ९० ॥ एक एक माजि लिपै हीरो
के वाग अंगूरी है ॥ ताल खुदा दिए जिंदरी न्हाने के तांई
॥ ९१ ॥ लखी वनजारारी हीरो वसा दिया गैल में ॥ सह
र वसा दिया हीरो जंगल के मांहीं ॥ ९२ ॥ सात दिना में-
रे रांझे आया है वाग में ॥ खवरि करो कौना वस्ती-
परी के तांई ॥ ९३ ॥ कौन राजा के रे मालिन वो वाग वगी
चरा ॥ किस राजा की रे मालन ह्यां फिरत दुहाई ॥ ९४ ॥-
हीर निमानी का रे फकड ये वाग वगीचरा ॥ पट मल भा
ई की गवरू ह्यां फिरत दुहाई ॥ ९५ ॥ टुक पट षोल दे-
मालिन जनाने वाग के ॥ सैल करन दे मालिन वाग
के मांहीं ॥ ९६ ॥ कौन दिसा तें रे फकड चला तू आवता

कौन दिसा कूं रे गवरू लें सुरति उठाई ॥ ९७ ॥ दूर दिसा ते
री मालन चला में आवता ॥ एति वसें गेरी मालन बाग
के मांहीं ॥ ९८ ॥ जो पट खोल दूं फकड वसै इस बाग में ॥
सीस दूसरा रे बाबा मेरे धर नाहीं ॥ ९९ ॥ जो मंगै गी री मा
लन सोई में देउंगा ॥ मैं वकसूं गा री मालन अदल पा
तसाही ॥ २०० ॥ एक गले में रे फकड दीसै मोहि गूदरा
कहां ते लावेगा फकड अदल पातसाही ॥ १ ॥ चलि उ
ठि वैठि रे फकड किसी दरखत तलें ॥ तक्या ज्याने रे बाबा व
गौं के ताईं ॥ २ ॥ तब ही तोरी रे फकड कथी ली लौदरी ॥ र
सर सरकू री रे शंके मालन के तांईं ॥ ३ ॥ ऐसी मारी रे माल
न षाल उधेरियो ॥ तन में वाकी रे गवरू नें छोडी नाहीं
कपरा फटि गये वस्ती मालन के वदन के ॥ चोली खिस ग
ई मालिन की सीने ताईं ॥ ५ ॥ खडी पुकारती मालिन मर
रन हिं आवती ॥ देत दुहाई रे मालन कि पटमल भाई ॥ ६ ॥
गरदन मारता मालिन छोडूं न हीं जीवती ॥ जान बकस
दई रंडी किसी के ताईं ॥ ७ ॥ खाल कढाय लूं फकड कि
भुस भरवाय दूं ॥ जाय पुकारूं रे फकड हीर के तांईं ८ ॥
हाय हाय करनि रे मालन महल कूं उठि चली ॥ जाय पुका
री रे मालन महल के मांहीं ॥ ९ ॥ जब सुधि पाई रे वस्ती
वडी भोजाई नें ॥ किन पिटि वाई रे वस्ती मालन के तांईं
॥ १० ॥ लौंडी आई रे वस्ती जबी डोढी न में ॥ पूछन लागी
रे लौंडी मालन के तांईं ॥ ११ ॥ कौन सकस नें री मालन
जिंदरी तोइ दुख दिया ॥ पकड मगाउ री मालन उसी के ता
ईं ॥ १२ ॥ एक फकीर री बीबी आया किसी देस ते ॥ हुकम
न मानता फकड किसी के ताईं ॥ १३ ॥ ऐसा वह दारे वस्ती

सुनांजचहीरनें॥ कौनेंदुखदिया लडकी मालनकेतां
ई॥२४॥ लौडीखदायदेभीतरमालन बुलवायलै॥ पू
छूमरम कीलडकी मालन केताई॥२५॥ औरदिनआ
वतीमालन फूल भर लावती॥ गहनालावती मालन-
हीरके तांई॥२६॥ कौनसकसनेंरीमालन तुझेसताइ
यां॥ दरधदिमानीरेमालन फिरादूआई॥२७॥ एक
फकीररीबीबी आयामतवालासा॥ अदलजभामना
बीबीमाननानाहीं॥२८॥ कैसीवैसहैमालन कौनउन
हारहै॥ सूरति बताइदैमालन फकडकेतांई॥२९॥ जे
सासरजरीबीबी नपैहैज्येठका॥ नैनवरेंहैरीबीबीअ
गिनिकी नाई॥२०॥ जौदिल महैरहो बीबी करे निहाल
त्रुह॥ सीतलऐसाहै बीबी चांदकीनाई॥२१॥ ऊंचा-
मस्तक है बीबी सिरवाको ढोलसौ॥ गरदनऐसीहैबीबी
हंसकीनाई॥२२॥ दोउभुजऐसीहै बीबीगजिंदकीसूंड
सी॥ सूरसराहियेगवरूजगतकेमाहीं॥२३॥ उदरसूमा-
लरीबीबी लिया दिलखेंचिकें॥ रूपकेनालेरीबीबीच-
हादिलजाई॥२४॥ गोरारंगहैबीबी रंगसुरंगहै॥ जोवन
चुवैहै वली वदनकेमाहीं॥२५॥ खंजननैनहै बीबीभौंहै-
कमानसी॥ चाहन ऐसीहै बीबी लगैमानौंबानसे॥२६॥
बोलन हसन में बीबी झरेजैसेफूलसे॥ डोलनऐसीहै बी-
बी गजिंदकी नाई॥२७॥ वारीवैसहै गवरूबरसवह बी-
सका॥ फौजजमानी की बीबी संगचलिआई॥२८॥ टे-
कीऐसाहै बीबीटरैनहिंटेकसें॥ दाताऐसाहै बीबी सूर
रणमाही॥२९॥ भोराऐसाहै बीबी भोरीसाहसा॥ चातु-
रऐसाहै बीबी दूसरनाहीं॥३०॥ करमेंनसबीहै बीबीक

फनी गातमें ॥ भेख फकीर का बीबी वह धरि कर आया
॥ ३१॥ मैं लखि लियारी बीबी कोई सिरदार है ॥ बखतपरे
तेरी बीबी फकड़ है आया ॥ ३२॥ रूप बखानारी मालि-
नड़सी महबूब का ॥ दई इनामरी हीरो मालन के तांई
॥ ३३॥ मोहरन डालीरी हीरो मालिन की भरदई ॥ औरग
ले कारी बीबी हार पहराई ॥ ३४॥ जो मांगे गीरी मालन-
सोई में देंउगी ॥ वडी करूं गीरी मालन में तेरे तांई ॥ ३५॥
तख्त बिछाइयो मालन फकड़ बैठाइयो ॥ खातर की
जियो मालन फकड के तांई ॥ ३६॥ खाना खिलाइयो
मालन दूध पिलवाइयो ॥ सेज बिछाइयो मालन फक
ड के तांई ॥ ३७॥ बाग दिखाइयो मालन सैल कराइयो ॥ फू
लन हार री दीजो फकड़ के तांई ॥ ३८॥ और दिना तौ री बी
बी मालन मांडे बाग की ॥ आज दिना तेरी मालन सगी माजा
ई ॥ ३९॥ इश्क दिमानारी बीबी परा साडे फंद में ॥ मोल
लेउगी मालनन तूं मेरे तांई ॥ ४०॥ अरज करूं गीरी माल
न वडी भौजाई सं ॥ जारति आउंगी मालनि फकड़ के तांई
॥ ४१॥ हंसती हंसतीरी हीरो उतरी महलतें ॥ आय गल-
लागीरी हीरो वडी भौजाई ॥ ४२॥ अरज करूं हूंरी भाभी-
सुनौं एक वीनती ॥ सैल करायलाभाभी बागों के तांई ॥
॥ ४३॥ एक फकीररी भाभी उतरा है बाग में ॥ देतमुरा-
दरी भाभी जगत के तांई ॥ ४४॥ अरज करौना री हीरो-
अपनी मायसें ॥ कैकहि मेजोरी भाभी तूं यरम लभाई ॥ ४५॥
जवही सुरतिरी हीरो करी है महल की ॥ पलंग पै पोढ़ती च-
लीहीर की माई ॥ ४६॥ हाथ जोरूं हूंरी अंमां करूं मांडी
वीनती ॥ अरज गरीबीरी अंमा दिलौं पर आई ॥ ४७॥ गो

दउठा लई हीरो छतियां लगा लई ॥ घानौं से प्यारीरी हीरो मे बहुत लडाई ॥ ४८॥ पूछन लागीरी अंमा बहुत मुखपायकें ॥ आज क्या वासते हीरो फजर ही आई ॥ ४९॥ कल्हि तौ जाडूगेंरी अंमा नौलखा बाग में ॥ सीरखजरूर दै अंमा तू मेरे ताई ॥ ५०॥ आप अकेलु री बच्ची काहे कूं जानि हौ ॥ दोनौ जादोरी बीबी ननद भौजाई ॥ डोला मगवा लिया हीरो चंडोल मंगवालिया ॥ भई असवारी हीरो बागों के नाई ॥ ५२॥ चली भौजाई री बस्ती पोहुची है बाग में ॥ फूल नदलीरी मालन हीरो को लाई ॥ ५५॥ जारलजरूरी री भाभी करीहे फकीर की ॥ दई असीसरी भाभी वगर घर जाई ॥ ५६ होइ फरजंद री भाभी तिहारी कूख में ॥ रहौ सुहागरी भाभी तिहारे ताईं ॥ ५७॥ अरज करूं हूं जी फकड सुनौ राकवी ननी ॥ देउ मुराद तौ फकड हीर के ताईं ॥ ५८॥ चालि उठि देषि री भाभी सैल करि बाग की ॥ क्या बतरानी है भाभी फकड के तांईं ॥ ५९॥ और सहेलरी भाभी चली हैं सैलकूं ॥ हीरो छुटी है रे बस्ती आसिक के नांईं ॥ ६०॥ रौसनरौ सनरे सैयां सहेली सब फिरें ॥ हीर छिपी है रे बस्ती चंपे के माहीं ॥ ६१॥ आइ मिल जांनि रे रांझे लगी तो संदेसवी ॥ विन देखे तेरे गवरू जरा सुधि नांहीं ॥ ६२॥ जाय क्यों ना मिले रे हीरो तू कछू पठान सें ॥ हम तौ फकीर री हीरो वो मस्त इलाई ॥ ६३॥ इतनी सुनत ही हीरो गिरी मुरझाइ कें ॥ तन में बाकी री हीरो रहो बी नांहीं ॥ ६४॥ जब ही फकीर नें गवरू रांझा समझा दिया ॥ यौं उडजा यगी लडकी कपूर की नांईं ॥ ६५॥ जब उठि दौरो रे रांझे लई भरि अंक में ॥ मुई परी है रे हीरो जरा सुधि नाहीं ॥ ६६॥ देख

रिमानी कूं लड के अजव दिल रूप कूं ॥ मुरछा आइ गई
रांझे वदन के मांहीं ॥ ६७॥ दोउ जन गिर परे वस्ती वो कं
चन वेल पै ॥ वोल सुनावता फकड दोउनके ताईं ॥ ६८
हंसि वतराय ल्लेरे लड के हीर निमानी सुं ॥ फिर उठि जा
इगी वच्चे महल के ताईं ॥ ६९ ॥ नैना दोऊ लगि गए ग
वरू चुभै जैसे चंद मैं ॥ पलक ठगोरीरे वस्ती वलग
तीना हीं ॥ ७०॥ तू महवूव है रे रांझे हीर की जिंदगी ॥
हीर निमानी रे वस्ती तेरे दिल माहीं ॥ ७१॥ अव घर जा
न दे लड के सुनें भौजाइयां ॥ खवर करैंगी रे मेरी अं
मा के ताईं ॥ ७२॥ हसि भौजाई रे वस्ती हीर से यों कहै ॥
रंग चुवै है री वीवी वदन के माहीं ॥ ७३॥ अव ताईं तो री
हीरो लखै ही वालियां ॥ अव तो देखियै हीरो विरह म
व वालियां ॥ ७४॥ जाय कहूंगी री हीरो अंमाने री वीर सें
॥ हीर निमानी कूं साहिव जरा सुधि नाहीं ॥ ७५॥ हाथ जो
रू हूं री भाभी करूं एक वीनती ॥ वुझी अगिन कूं भाभी
तू मति दे लगाई ॥ ७६॥ खवर भई है री हीरो नगर वाजार
में ॥ चरचा करे हैं वीवी वो लोग लुगाई ॥ ७७॥ रांझा मे
रा री भाभी जिंद रांझे दिया ॥ परीं ऊख मारो री भाभी वेलो
ग लुगाई ॥ ७८॥ हीर निमानी री वस्ती आई है महल
में ॥ रांझा रहि गया गवरू वाग के माहीं ॥ ७९ ॥ भाभी
कहति है लड की अंमा समझाइ कें ॥ हीर निमानी कूं
सास रखो घर माहीं ॥ ८०॥ वारह वरष की वहू अ री
हीरो वालियां ॥ खाने कूं मागती वहु अर रोइ मेरे ताईं ॥
॥ ८१॥ गुड़िया खेलती वच्ची वो पलना झूलावती ॥ इ
स कमो हैसन की लड की जरा सु धि नाहीं ॥ ८२॥ एक

दिन आईरी अंमा हीरो के बंगलां ॥ पूछन लागरी अंमा सहेलिन नांई ॥ ८३ ॥ मैं कुरवानरी हीरो सांडेसी सपै ॥ जोवन वारीरी वच्ची तुजे वतलाई ॥ ८४ ॥ सौंगद खांउरी अंमा निहारे सीस की ॥ दूध पिलावने भाभी दई मुजे गारी ॥ ८५ ॥ मही मगायदूं वेटी खिरक वरवायदूं ॥ ग्वार रखाय दूं वच्ची मेनेरे नाई ॥ ८६ ॥ दूध कढायला वेटी जुदा औठायले ॥ आपन पी औरी वच्ची चाहे जिस प्याई ॥ ॥ ८७ ॥ एक पठान का लडका अंमा रहै वाग में ॥ हुकम करै तौरी अंमा लेड बुलवाई ॥ ८८ ॥ मही चरावैगा अंमा दूध दुहि लावैगा ॥ करैरखवारीरी अंमा खिरक के मांहीं ॥ ८९ ॥ जो दिल चाहैरी वच्ची उसे बुलवायले ॥ नौकर राखिलै हीरो खिरक के माहीं ॥ ९० ॥ जब घर गईरी अंमा उलटि कें आपने ॥ हीर निमानी रे लड के भाभज पर आई ॥ ९१ ॥ इस बंगले मेंरी प्यारी हीर का वैठना ॥ रांझा रहैगा भाभी खिरक के मांहीं ॥ ९२ ॥ हुकम करै तोरी भाभी अरज गुजराइदूं ॥ ग्वार बुलाइलूं भाभी खिरक के मांहीं ॥ ९३ ॥ जब भाभीनेरी हीरो हुकम फुरमाइयौ ॥ अवही बुलाइलै हीरो रांझे के नांई ॥ ९४ ॥ जव हीरोंनेंरी प्यारी मालन बुलिवाइयौ ॥ तुरत बुलालिया हीरो रांझे के नांई ॥ ९५ ॥ जवही सजन नौ जानी चला है खिरक कूं ॥ दुनियां देखती वस्ती बजारों मांहीं ॥ ९६ ॥ अजव महबूब है गबरू सूरत तेरी खूब है ॥ यह फरजंद है कोई असल पातसाही ॥ ९७ ॥ पांचौ कपडे लडके पांचौ हथियार हैं ॥ सबजा घोडा रे गबरू चढन के नाई ॥ ॥ ९८ ॥ खबर भई है रे गबरू कचैरी के बीच में ॥ हसिबु

लवायारे गवरू के पटमल्ल भाई ॥ २९९ ॥ कौन पठान-
का गवरू तू फरजंद है ॥ नौकर रहै नौ गवरू रखूं तेरे
नाईं ॥ ३०० ॥ अब क्या देडगा पटमल्ल नूं सांडी नौकरी-
॥ कंहां खंदावेगा गवरू तू मेरे ताईं ॥ ३०१ ॥ जो मागैगा-
रे गवरू सोई मैं देउगा ॥ मैं जानूंगा रे गवरू सगा मेरा-
भाई ॥ २ ॥ डेरा कर दीजै रे गवरू रंग कचैरी में ॥ दिलल
हां चाहै रे गवरू सैल करि आई ॥ ३०३ ॥ जब खबर भे
जा रे रांझे हीर निमानी पै ॥ नौकर रहा ऊंजानी कचै-
री मांहीं ॥ ४ ॥ कबहूं पठायदै पटमल्ल दौर करि आइ
यां ॥ कबी पठायरै गवरू महियों के मांहीं ॥ ३०५ ॥ २
महीं चरामता गवरू दूधि दुहि लामता ॥ रातिर खाम-
ना गवरू खिरक के माहीं ॥ ३०६ ॥ ऐसी विपति रे रांझे-
खरावी मुगतियो ॥ क्या फल पाया रे रांझे इश्क के-
मांहीं ॥ ३०७ ॥ माछर काटते गवरू महियां चूकदौं।
नींद न आवती रांझे कीच के मांहीं ॥ ३०८ ॥ जिसके
काजै रे गवरू छोडी पातसाहियां ॥ सौ तो हीर रे रांझे-
ड़ो मिलती नांहीं ॥ ३०९ ॥ आपन सोवती हीरो तू खस
के बंगले ॥ मेरे काजैं री हीरो तें खिरक बताई ॥ ३१० ॥
आपन खावती हीरो तू नाना पुलावने ॥ मेरे काजैं-
री हीरो चने की लाई ॥ ११ ॥ आपन चाखती हीरो तू दू
ध मलाइयां ॥ मेरे काजै री हीरो तें छाछि खंदाई ॥ १२ ॥
आपन सोवती हीरो तू फूलन सैज पै ॥ मैं दम औंचता
हीरो फटोले मांही ॥ १३ ॥ तेरे काजै री हीरो फकीरी
मैंनें ले लई ॥ कंचन देह में प्यारी मैं ने खाख रमाई
॥ १४ ॥ रांझा कहन हैं गवरू वा हीर निमानी सूं ॥ कि

सीसकसनें प्यारी महां ज्ञाय लगाई ॥ १५ ॥ खबर-
भई है रे जानी ज्ञा पटमल भाई पै ॥ हीर निमानी कूं
गवरू लगी आसनाई ॥ १६ ॥ जव उठि आया रे पट-
मल अपने महल में ॥ माय बुलाय कें पटमल्ल वहु
त समुझाई ॥ १७ ॥ जो तू जाने री अंमा पटमल सिर-
या गहे ॥ हीर निमानी कूं अंमा निकसन दे नांहीं ॥ १८
॥ क्या हीरो ने रे पटमल्ल महैल खडा किया ॥ क्या-
सिर काटा रे वेठे किसी का जाई ॥ १९ ॥ उन सिर का-
टा री अंमा पटमल भाइ का ॥ मोह पै नाक री अंमा रह-
न दई नांहीं ॥ २० ॥ जेहेर मगाय लू अंमा खुदा जानें-
खाय लूं ॥ सजन मले सेरी अंमा करी आसनाई ॥ २१
॥ सब घर वहू री अंमा सवै घर वेटियां ॥ गजव खु-
दा का री अंमा नेरे घर आई ॥ २२ ॥ जव उठि गया रे प
टमल्ल रंग कचहेरी में ॥ मता किया है रे पटमल सिर
दारों मांहीं ॥ २३ ॥ जो कोई मारेगा भाई रांझे ग्वार कूं ॥
देउं इनाम रे यारो में जिसके नाई ॥ २४ ॥ इतनी सुनत
ही वस्ती मालननें जा कही ॥ क्या सुख सोवती हीरो
पलंग के माहीं ॥ २६ ॥ मारा जाइगा हीरो रांझा पातसा
ह वी ॥ हुकम किया है री वी वी जल्लादों ताई ॥ २७ ॥ २
जव उठि वैठी री हीरो सस्त्र लिये हाथ में ॥ लारवों रो-
कने हीरो कूं रुकनी नाई ॥ २८ ॥ उतरी महल नें हीरो-
जडी हथियार सूं ॥ मनौ खवूतरी लड की ज्ञ गिर दी-
खाई ॥ २९ ॥ टुक पट खोल दे भाभी हमें तू जान दे ॥ सज
न मिलैंगे री भाभी खिरक के मांही ॥ ३० ॥ जो पट खो
ल दूं वी वी तुजै मैं जान दूं ॥ गरदन मारेगा वीवी नेरा

पटमल्लभाई ॥ ३१ ॥ वीर जगायदूं बीबी अंमा बुल-
वायदूं ॥ जब तुम जाइयो बीबी खिरक के मांही ॥ ३२ ॥
ऐसी सरापूंगी भाभी भसम है जाइगी ॥ और मरे गारी-
भाभी तेरे सिर का सांई ॥ ३३ ॥ जब पट खोल दए भाभी-
हीर सों यों कहे ॥ तू जाय मिलरी बीबी सजन के तांई ॥ ३
४ ॥ ऐसी अंधेरी रे बीबी बिजली चमकती ॥ इंदर रा-
जा नें लड की बोछ डी लगाई ॥ ३५ ॥ हीर गई रे रांझे ज-
बी बा खिडक में ॥ बिजरी चमके रे लड के बादर के मा-
हीं ॥ ३६ ॥ सोवै के जागे रे रांझे अवाजें देत हूं ॥ हीर-
खडी है रे गवरू के नेरे ताई ॥ ३७ ॥ तू सुख सोवै री हीरो
रहे उस महल में ॥ मैं नित तरफता हीरो खिरक के मां-
हीं ॥ ३८ ॥ प्रीति करी हीं रे रांझे चोरी मैनें ना करी ॥ सो-
दुनिया मेरे गवरू के होती आई ॥ ३९ ॥ प्रीति लगाइ-
ये गवरू के और निबाहिये ॥ पीठ दिये तेरे प्यारे ठिका
ना नाहीं ॥ ४० ॥ मेरी तेरी लगि गई रांझे गहेरी गहि गई
॥ सो कर तार नें प्यारे के सम फिल गाई ॥ ४१ ॥ प्रीति क
रेंगे री हीरो अब किसी मरद सें ॥ क्या रंडी की हीरो फि-
टि आ पा नाई ॥ ४२ ॥ मैं ना जिआया री हीरो घरों की पात
साहियां ॥ रोवन छोडे री प्यारी मैं सातों भोजाई ॥ ४३ ॥
मारा जाउंगा जानी मैं नारूक कारनें ॥ खबरि करै नहीं
कोई मेरे घर जाई ॥ ४४ ॥ तंग सियाले का गवरू रांझा
पातसाहि है ॥ तेरे का जेंरी हीरो मैं महीं चराई ॥ ४५ ॥
जिन पट्टेन में हीरो री तेल फुलेल था ॥ जिन पट्टेन में
प्यारी मैं खाख जगाई ॥ ४६ ॥ मैं नित सोवता हीरो री
फूलन सेज पै ॥ भार पिछावती जिंदरी सातों भोजाई ॥

॥ ४७॥ मुखपुचकारती हीरो वेगोद उठावती ॥ गलेल गावती हीरो वोमेरे ताई ॥ ४८॥ जलभरलावती जिंद री वेमुखे धुवावती ॥ दूधपिलावती जिंदरी वेमेरे ताई ॥ ४९॥ काल्हि तो जांइगे हीरो के अपने देस कूं ॥ सत्तर पीर की प्यारी में लाख दुहाई ॥ ५०॥ जोतू जाइगा रांझे हीर मरजाइगी ॥ फिरजीमन कीरे प्यारे में हिरगज नांहीं ॥ ५१॥ मेंवी नजूंगी रे रांझे माई और वाप कूं ॥ और तजिजांउगी प्यारे संगामें भाई ॥ ५२॥ सोइ मतिजैयो रे रांझे रहियो हुस्यार सें ॥ लोग फिरत हैं तेरे मारन के ताई ॥ ५३॥ चिल्लत पहरादई हीरो रांझे के गात में ॥ करदई हैरे जानी करों के मांही ॥ ५४॥ फेंकी चिल्तरे रांझे नें अपने हाथ ते ॥ सूर लडैगा री हीरो अवसन मुखजाई ॥ ५५॥ न्यौं मति जानियो प्यारी रांझा है एकला ॥ सत्तर पीर री हीरो लडें मेरे तांई ॥ ५६॥ हुकम करै तौ री जानी मारूं सारी फोज कूं ॥ कहै तो मारूं री हीरो तेरे पटमल भाई ॥ ५७॥ पटमल मारे ते गवरू घरजाइ वापका ॥ वीर विना तौ रे रांझे मेरे पीहर नाहीं ॥ ५८॥ हुकम किया हैरे गवरू पटमल पातसाहि नें ॥ सिंह छुडाइ देगवरू रांझे के ताई ॥ ५९॥ जाइ खडा हुआ गवरू भरे दरवार में ॥ करी सलाम नो रांझे पटमल के ताई ॥ ६०॥ देखि दिमाने कौ गवरू छके सब रूपसीं ॥ रूप खुदा का रे लडके तेरे पर आई ॥ ६१॥ हुकम करो क्यों नारे गवरू पटमल पातसा ॥ सिंघ दहाडता गवरू में डरतां नाहीं ॥ ६२॥ सिंघ छुया हैरे गवरू असल वहके हरी ॥ सूर खडा हैरे गवरू अवसन मुख नाई ॥ ६३॥

हीर पुकारती जिंदरी के ऊंची टेक पै ॥ पछ करो क्यों
ना मौला रांझे के तांई ॥ ६४ ॥ तसबी हाथ में लडकी
रटै उस नाम कूं ॥ रांझा रांझा री हीरो एक दम लाई ॥ ०
॥ ६५ ॥ हाथ पर रखियेरे गवरू अवी दरवार में ॥ वैरी ख
डा हैरे गवरू तेरे सिर पर आई ॥ ६६ ॥ जो जीवे तो रे रां
झे हीर कुरवान है ॥ जो मर जाय तो प्यारे मरू संग आ
ई ॥ ६७ ॥ साको होइगो लड के धुनें सब देस में ॥ जनम
न होइगा जानी जगत में आई ॥ ६८ ॥ ढाल लई हैरे ल
डके जवी हाथ साम में ॥ दिया कटार रे रांझे करेजो के
माहीं ॥ ६९ ॥ जो फिर देखैरे लड के हीर के हाथ में ॥
चढी कमान रे जानी तीर विस मारी ॥ ७० ॥ तीर छु
टा है रे गवरू लगा उस सिंघ के ॥ उथल पया है रे
जानी जरा दम नाहीं ॥ ७१ ॥ मार सिंघ कूं गवरू लो
ग सब देखते ॥ दहसत खाइ रे पटमल दिलों के मां
ही ॥ ७२ ॥ रांझा देखा है पटमल सूर वह एक ही ॥
सिंघ मारा है गवरू वकरी की नाहीं ॥ ७३ ॥ फिर स
मझाइयो गवरू उसी दीमान नें ॥ सिंघ मारि के प
टमल मारे तेरे तांई ॥ ७४ ॥ तू समझाइ लै पटमल
पास वैठाइ कें ॥ खातिर करे क्यों ना गवरू रांझे के
तांई ॥ ७५ ॥ क्या कुछ देंऊं रे लड के कहू मेरे सें नहीं
॥ लडकी होइ लौ रांझे देंऊं तेरे तांई ॥ ७६ ॥ तू तो नो
... रहै रांझे सही दरवार का ॥ वैरी हमारे पै गवरू च
ला क्यों ना जाई ॥ फौज कराइ दै पटमल जो मेरे संग
नू ॥ देस वताय दे पटमल वैरी के तांई ॥ ७८ ॥ हुकम
करै तो रे पटमल लाऊं उनै जीति कें ॥ कहै तो लाऊं

रेगवरू में सीस उत्तारी ॥७९॥ और असवावतौ पटमल सवी मेरे संगहै ॥ घोड़ा ना हिरे गवरू चढ़िन के तांई ॥ ८०॥ टुक तूठेरियो गवरू नौ लखा वाग में ॥ घोड़ा आयजायगा गवरू चढ़िन के तांई ॥८१ ॥जवचढि गईरी हीरो चचा दरवार में ॥ करीसल्लाम री हीरो चचा के तांई ॥८२॥ आमतिदे खीरी हीरो चचा ने दूरसे ॥ सत्तर मूढारी लाडो कूं दिये विछवाई ॥ ॥८३॥ आडमेरी हीररी लाडो चंदरमा वैठिजा ॥ विगर वुलाई री हीरो तू क्यौं करि आई ॥८४॥ गोद उठा लई हीरो पास वैठा लई ॥ क्या कुछ सवव है वच्ची मेरे घर आई ॥८५॥ रांझा चलाहै चाचा के वडी मुहीम कूं ॥ हुकमदि याहै रे चाचा मेरे पटमल भाई ॥८५॥ सवी हथियार तौ चाचा दए मैंने वापके ॥ घोड़ी मागमें चाचा मैं तुज परआई ॥८५॥ दातन काटती हीरोरी लातन मारती ॥ हाथन धरनदे वत्ती किसी के तांई ॥८६॥ जीन लगाम तौ चाचा मुजे वतलाय दे ॥ मैं सधिजांउरे चाचा देषो मेरे तांई ॥८७॥ एक घर खोयारी हीरो तें अपने वापका ॥ दूजा खोमने हीरो मेरा घरआई ॥८८॥ मेंनें घर खोयारे चाचा अपने वापका ॥ तेरा घर खोवेगी चाचा दे नेरीजाई ॥८९॥ जीन वधा लिया हीरो लगाम चढ़ा लई ॥ चढि घोड़ी पैरी हीरो रंझे पै आई ॥ ९०॥ घोड़ी लादई हीरो रांझा सफा किया ॥ चौकस रिहियौरे गवरू जंग के मांहीं ॥९१॥ आगें तुम चलो जानी पीछें मैं आउगी ॥ जल भरलाउगी प्यारे मैं तेरे तांई ॥९२॥ रांझा चालियौरी

सजनी जवी वह युद्ध कूं॥ हीर निमानी रे मन में वह धकपक लाई॥ ६३॥ सगुन मनावती हीरो री पंडित पूछती॥ जौ जंग जीत कें गवरू रांझा घर आई॥ ६४॥ बांटूं वधाई रे प्यारे खजाना लुटाऊंगी॥ फकड़ जिमाउंगी गवरू में तेरे तांई॥ ६५॥ दाहिने अंगतें वसी आई एक अस्तिरी॥ गरस भरी तो रे तिरिया वह जल भरि लई॥ ६६॥ डेरा किया है रांझे वैरी की सीम में॥ मही खिदाई गवरू नें छेर कराई॥ ६७॥ फौज चढी है गवरू के दल बादल भरी॥ धरती अंबरो वसी वह दीखन नाहीं॥ ६८॥ दोउ दल जुरे हैं गवरू जवी वहां जाइ कें॥ सूरचढे हैं रे गवरू दोऊ दल माहीं॥ ६९॥ आगें वढि के रे गवरू करे हाथियार कूं॥ तीर चलै हैं रे गवरू मेह की नाई॥ ४००॥ चलें तरवार रे सूरा सीस कटैं भेपरैं॥ रुंड लडै हैं रे गवरू जंग के माहीं॥ १॥ वैरी मारि कें रांझे लीये सिर काटि कें॥ फौज फिरी है रे ज्वानौं रांझे के तांई॥ ४०२॥ जवलगि कलंगी रे रांझे चमकती सीस पै॥ हीर निमानी कूं जानी जरा भय नाहीं॥ ३॥ भीर भई है रे गवरू परी के विमान की॥ गल दिना तौ रे जानी वह दीषन नाहीं॥ ४०४॥ परी विमान पै हीरो नवी वह चढि चली॥ बोल सुनाया री हीरो रांझे के तांई॥ ५॥ निकलि जा वीच ते रांझे किनारे हो खडा॥ रगा करै है रे जानी ये तेरे तांई॥ ६॥ औसामा रंगा प्यारी उडा देउं धूर सी॥ गरद मरैं तो हीरो करूं छिन मांहीं॥ ७॥ दई तरवारि रे रांझे वैरी की पीठ में॥ करी सलाम तो वसी चचा के तांई॥ ८॥ विचरी फौज-

तो वस्ती उलटि घर आइयो ॥ खबरि भई है रे गवरू
पटमल के तांई ॥ ९ ॥ सीस लिया है रे रांझे पटान वथा
लमें ॥ नजरि किया है रे गवरू पटमल के तांई ॥ १० ॥ हं
सि मुसिकाया रे पटमल वैर सब छोडि कें ॥ जो मागेगा
रे गवरू देउं तेरे ताई ॥ ११ ॥ क्या मांगूगा रे पटमल गर-
ज मुझे क्या परी ॥ हाथ दिखा दिया पटमल में तेरे ताई-
॥ १२ ॥ जंग सियाले का पटमल रांझा पातसाहि है ॥ रा-
जगि तूं हूं रे पटमल पसम की नाहीं ॥ १३ ॥ जब लिख
भेजा रे पटमल वा कल्लू पठान कूं ॥ गौने लेजा रे वस्ती
हीर के ताई ॥ १४ ॥ इतनी सुनकें रे कल्लू ने वाटी वधाइ
यां ॥ खुसी हुआ है रे गवरू दिलों के मांहीं ॥ १५ ॥ संग
सहेलियां हीरो आप अकेलियां ॥ लेन कूं आई री वस्ती
अंमा भौजाई ॥ १६ ॥ मेरा कह्या मानले वच्ची चलो अ
व महल कूं ॥ ग्वार गमार की वच्ची तजो अस ताई ॥ १
७ ॥ तेरे जाने री अंमा वो ग्वार गमार है ॥ मेरे जाने री अंमा
सिरों का सांई ॥ १८ ॥ गौना वी होइगा अंमा रांझा पातसा
हिसें ॥ कल्लू वी होइगा री अंमा सगा मेरा भाई ॥ १९ ॥ सब घ
र वहूरी हीरो सबै घर वैठियां ॥ गजब इला ई री हीरो मेरे
घर आई ॥ २० ॥ जो बुर वाई री हीरो में पर घर सुनत ही ॥
सो बुर वाई री हीरो मेरे सिर पर आई ॥ अपने पहेरे री अंमा
सब कोई जागता ॥ मीत किया था री अंमा ने घर का सा
ई ॥ २२ ॥ नगर ढंढोरा री अंमा सैयो सा नूं फेरती ॥ धीय
जनं ती री अंमा गरब गिर जाई ॥ २३ ॥ लाड विष खाइ मर
हीरो वूडो दरयाव में ॥ अब जीमन की वस्ती में हिरगज
नाहीं ॥ २४ ॥ क्यों विष खाइ मरें सासू वूडे दरयाव में ॥ च-

हू समझावती वस्ती सासू के ताई ॥ २५ ॥ हीरखदायदूंसा
सू जाय घर आपने ॥ अवदुलवायाहै सासू पठान केताई
॥ २६ ॥ कलूचलाहैरे गवरू वडी तैयारी सूं ॥ सहर सियाले
कीगवरूनें सुरतिउठाई ॥ २७ ॥ कई हजारलोगवरूनें हा-
थीसंग लिये ॥ तुरीतुरंगकी कलूके गिनतीनाहीं ॥ २८ ॥
दिन चारिक में कलू आयाहै सियालेमें ॥ डेराकियाहैरे-
गवरू जंगल के मांहीं ॥ २९ ॥ जव मिज मानीरे पटमल
कलूके भेजियो ॥ दाने घास की पटमल करीतैयारी ॥
॥ ३० ॥ मालिन आईरी वीवी नौलखा वागते ॥ फूलन-
हाररी मालिन हीर कूं लाई ॥ ३१ ॥ लूमित लावती मालि
न गजरे फूल के ॥ सोवौ हाररी मालिनि आज वहनाहीं
॥ हारगुहाहैरी हीरो के गंफेमीतनें ॥ जो लिखदियाहै वी
वी वांचिविसताईं ॥ ३३ ॥ काल्हि लौ जायगी हीरो तू कलू
पठानकें ॥ क्या फुरमावती दुसमन तू मेरे ताई ॥ ३४ ॥ रा
तिर हूंगीरे गवरू नौलखा वाग में ॥ ह्यां मिलजैयोरे गव
रू तू मेरे ताईं ॥ ३५ ॥ जव हंमि वोलीरी वस्ती सहेली हीर
की ॥ फिर कव मिलैगी हीरो हमारे ताईं ॥ कै कहूं देखो-
गी वीवी खुदा की साहिवी ॥ कै कहूं देखोगी वेहना सुपन
के माहीं ॥ ३७ ॥ उठि नून्हाड लै वीवी खडी हैं सहेलियां ॥
तेल उवटने वीवी वोनाइन लाई ॥ ३८ ॥ अंग न्हवाल ईव
स्तीरी सीसगुथा लिया ॥ पटिया पारी हीरो नें मांग भरा-
ई ॥ ३९ ॥ मेंहदी काजरौ वीवी करै मौजाइयां ॥ गहनों-
वहुतसौ हीरो खोलि पहराई ॥ ४० ॥ वस्तर पैहैरेरी वस्ती
वा हीरनिमानीनें ॥ दरपन खोलिकैं भाभी दरस दिखला
ई ॥ ४१ ॥ जव मुख देखौंगी हीरो मुकर लिओ हाथमें ॥

मान परी सूंरी हीरो अधिक दिखलाई ॥ ४२ ॥ नव-
मुख देखेंगे बस्ती निमानी हीर को ॥ पंछी मरेंगे बीबी
जंगल के माहीं ॥ ४३ ॥ यह मुख देखेगा भाभी री रंझा
वालसा ॥ और किसी से री भाभी काम कछु नाहीं ॥ ४४ ॥
मुख दिखलाउंगी भाभी उसी महबूब कूं ॥ जब सुख पांउ-
गी भाभी दिलों के माहीं ॥ ४५ ॥ उठि नो न्हाइ लै हीरो संग
सहेलियां ॥ और खडी हैं री हीरो अंमा भौजाई ॥ ४६ ॥ र-
बीर मिला है री हीरो बांह पसारि के ॥ और गल लगि र-
ही हीरो सगी भौजाई ॥ ४७ ॥ हाइ दुख दे चली हीरो री-
दिल मेरा ले चली ॥ सूना करि चली बीबी महल के तांई
॥ ४८ ॥ भई असवारी हीरो रंग चंडोल में ॥ करी सला-
म तो परमल्ल कल्लू के तांई ॥ ४९ ॥ बीर चला है री बीबी
तुजे पौहुचा मनें ॥ सूरज छिप गया बीबी सांझ है आई
॥ ५० ॥ आज बसौ नारे कल्लू नौलखा बाग में ॥ रातिर-
हौ नरे कल्लू फजर उठि जाई ॥ ५१ ॥ आय क्यौं ना मिलै
रे रांझै परीसा नूरु कली ॥ दरघ दिलों के रे प्यारे कहूं तेरे
तांई ॥ ५२ ॥ सब सुख सोवै रे गबरू दिलों के बीच में ॥ ही-
र तरफती रे गबरू बिरह दुख माहीं ॥ ५३ ॥ देखि दिमा-
ना रे रांझा परी कूं हो गया ॥ सुरति रही ना रे रांझे बदन के
माहीं ॥ ५४ ॥ अब जाय बसियो रे रांझे उसी दरगाह में ॥
पीर पूजूंगी रे प्यारे मिलूं तेरे तांई ॥ ५५ ॥ हीर दिमानी रे
गज बिनि ज बीच रहो गई ॥ सुख नहीं बोलती लडकी
किसी के तांई ॥ ५६ ॥ अन्न न खावती जिंदरी व जल न-
हीं पीवती ॥ नैंनों नहीं देखती हीरो किसी के तांई ॥
॥ ५७ ॥ खबरि भई है रे गबरू उ कल्लू पठान कूं ॥ मु-

ईपरीहैरेहीरोजरासुधिनाहीं ॥५८॥ वैदवुलाइयोग
वरूनवज दिखलाइयो ॥ दवाकराइयों कल्लू इसवे
गमनाई ॥ ५९॥ टुकमुख वोलिंयो वेगम पलकज-
रा खोलियो ॥ कल्लू खडाहैरी वेगम महर दिल मां-
ही ॥ ६०॥ क्यानन राईरे वेगम परी फेराकिया ॥ ॰
क्यापीरोंकीरे वावा भई गुस्ता खी ॥ ६१॥ देगचढाऊं
गा पीरो करूंगा कंदूरीमें ॥ जारतलाउंगा पीरो इसवेग
मताई ॥ ६२॥ जवसुरिदेखीरे वस्ती करवर फिरल
ई ॥ पानी मांगाहैवेगम पीमन के ताईं ॥ ६३॥ डोलाले
गया कल्लूउसीदरगाहमें ॥ जारति करवाईरे कल्लूप
रीकेताई ॥ ६४॥ दईदवानीरे कल्लू भलानेरा होइगा ॥
फेरवुलावैगा कल्लूमहल के मांहीं ॥ ६५॥ कल्लूपहुं
चारेगवरू अपने महलमें ॥ वटैंवधाईरैयारोंदरविलु
टाई॥ ६६॥ सवैसहेलियांवस्तीमंगलगाइयो ॥ काच
महेलमैं सखियनपिलंगविछवाई ॥ ६७॥ सखीसहे
लियां वेगम हुकम फुरमावती ॥ साहवआवैहेवेगम
महल केमांहीं ॥ ६८॥ साहवहोइगारी जिंदरी इहकि
सीओरका ॥ हीर निमानी का जिंदरी सगायह भाई ॥
॥ ६९ ॥ इतनी सुनतहीगवरू कल्लू मुख मोरियो ॥ से
जचढंतीरे वेगम कहैमुजैभाई ॥ ७०॥ नगारेचढा-
उंगा यारोमें पाचों पीरके ॥ जोकोई कहैगा गवरूक
रूंजिसताई ॥ ७१॥ वेगि वुलाइलैरे कल्लू उसी फ़
कीरकूं ॥ जिनदरगाहमेंगवरू कही तेरे ताई ॥ ७२
फ़कडआवैगा गवरू भली कर जाइगा ॥ जोमांगे
गारेकल्लूदेइ तेरेतांई ॥ ७३॥ होअसवारेकल्लू चलार

रगाहकूं ॥ फक्कड लाउगा गवरू महल के माहीं ॥ ७४ ॥
करजोरूंहूं रे फकड सुनौ एक बीनती ॥ करम करौ तौ
जी सांईं चलौ घरमाहीं ॥ ७५ ॥ इतनी सुनत ही फकड
तवी वह उठि चला ॥ चढि घोडे पै रे फकड महल कूं आ-
या ॥ ७६ ॥ हाथ पकरि लिया कल्लू मेहल कूं ले गया ॥ न-
जर दिखाई रे हीरो रांफे के ताईं ॥ ७७ ॥ भभूति लगाइयौ
फकड पानी पढ प्याइयौ ॥ हाथ धरा है रे फकड हीर-
पै जाई ॥ ७८ ॥ हसि मुसिकाई रे हीरो देखज वमीत कूं ॥
पीतन नई तो रे जिंदरी दिलों पर आई ॥ ७९ ॥ जो मांगेगा
रे फकड सोई मैं देउंगा ॥ फेरि कहैना रे फकड मुजै यह
भाई ॥ ८० ॥ आज अके खा रे कल्लू रहूं इस महेल में ॥
फजर भए तेरे कल्लू भली है जाई ॥ ८१ ॥ खाने कूं खाइ
गी कल्लू सोवै सुख सैज पै ॥ हसि बतराइगी कल्लू सा-
हब के ताईं ॥ ८२ ॥ और सब दुनियां रे गवरू गई उठि-
दूरि लव ॥ रांफा रहि गया गवरू हीर के ताईं ॥ ८३ ॥ ह-
सि बतराइयौ जांनी गरें लगाइयौ ॥ मता किया है रे रांफे
चलन के ताईं ॥ ८४ ॥ तीन पहर लौ रे गवरू भए इस-
सेज पै ॥ फजर भए तेरे गवरू चलौ उठि जाई ॥ ८५ ॥
दोउ जन उठि चलै जानी रोसन दान है ॥ पौन निकलग-
ई बाबा दीखती नाहीं ॥ ८६ ॥ दोउ जन उडि गए जानी
गए उस सहर में ॥ किया मुकाम रे गवरू उस तकिये-
मांहीं ॥ ८७ ॥ फजर भए तेरे गवरू कल्लू गया महल में ॥
सीस महेल में रे यारो हीर बीना हीं ॥ ८८ ॥ हाथ मलै है
रे कल्लू खडा उहां सिर धुनें ॥ रांफा ले गया गवरू हीर के
ताईं ॥ ८९ ॥ हुकम किया रे कल्लू नें अपनी फौज कूं ॥ अ-

वच दिजाउ रेगवरू पकरि लेआई ॥ ४९० ॥ जहां तुम देखोरे यारो तहां ते लाइयो ॥ डूइना मरे भैया तिहारे ताई ॥ ४९१ ॥ खबर भई है रे गवरू बस्ती के सिरदार पै ॥ हीर घिरा दई बाबा किले के माहीं ॥ ४९२ ॥ मेरा कहा मानि लै गवरू हमें तू जानि दै ॥ हीर फुरमावती बस्ती सिरदार के ताई ॥ ४९३ ॥ मेरी कल्लू की हीरो सदा की दोसती ॥ सीम सिमाने के हीरो सदां के भाई ॥ ४९४ ॥ अब लिख भेजूंरी हीरो में कल्लू पठान कूं ॥ तुजे लै जाइगा जिंदगी पलक के मांहीं ॥ ४९५ ॥ हम दुख पामेंगे गवरू बुरा तेरा होइगा ॥ आगि लगैगी रे गवरू सहर के मांहीं ॥ ४९६ ॥ आगि लगी है रे गवरू दारू बाजार में ॥ लाख बुझावते गवरू बुझती नाहीं ॥ ४९७ ॥ रांझे डिग आनी गया किसी देस कूं ॥ आखों देखते गवरू किसी कूं नाहीं ॥ ४९८ ॥ सोरठा ॥ चलत न जाने जाय पावन धरें धरन पै ॥ जैसे पवन अकास चालत है दीसै न हीं ॥ ४९९ ॥ लोग रहे सिर मार हीर न गई पठान कें ॥ लगन लगी जिहि बार जब पिय देखे सुपन में ॥ ५०० ॥ दोहा ॥ पिय प्यारी हिल मिल जबै आनंद लहै अपार ॥ जिनको बार न बांका कई तिन की पक्षि करतार ॥ ५०१ ॥ शुभं ॥

# ॥ इति हीर रांझा ॥

## समाप्तम

सांगीत रूप वसंत
शहर मेरठ मतबे अनवरी बफ़र
मायश लाला नत्थूमल सेठ

श्रीगणेशायनमः॥ अथ सांगीत रूपबसंत लिख्यते

दोहा कर जोड़ूं बिनती करूं धरूं तुम्हारा ध्यान
हूजे आप सहाय तुम दीजे बुध और ग्यान

कड़ा दीजे बुध और ग्यान मात तुमरे गुण गावैं॥ धूप दीप नईवेद्य पान और पुष्प चढ़ावैं॥ गुरु हैं लछमन दास सुर्गज्ञाना बरदीजे॥ हिरदे गै हरदेव दास पै किरपा कीजे

दोहा

षड़ग बाहन ले सिंह पै चढ़ भैरों ले साथ
हुक्कोर कर पिंडका परतंगा नें रहाथ

देवाजी परतंगा नें रहाथ भवन में नौबत बाजै॥ हारही जैकार संत कर जोड़ें साजै। सरबस रस दियत्याग-नाम निरैंी कर लीना। कीजे मेरी सहाय कहै लछमन आधीना॥ दोहा॥ रंगा बारका॥ ✣ ॥

बेमंदर उस एवंके जिसके रूपबसंत॥
इसमें दो षरकीर हैं एक नारी एक कंथ॥

कड़ा एक नारी एक कंथ जने दो कचला पाले॥ चिड़या का परलोक हुवा रहगये बिन माले। दिन दो यक के बाद चिड़े नें ग्यान उपाया। तज बच्चों का साथ और चिड़िया कर लाया। आग सोक की बुरी आन कचलैं को मारा। रूपबसंत की माने देख फिर ग्या॥ बिचारा रानी सोचै खड़ी हिंय धर बान बिरागी। जो मैं बी मर गई कवरों की यो गत होगी। राजा का रानी से दोहा

जिमी छाय कैसे लई किन बोले हैं बोल

अपने मन की सब गिरै हमसे दीजे खोल

कड़ा हमसे दीजे खोल किया कैसे मन भारी। किनें दे
खां तेरी ओर दई तम कूं किन गारी। नजर बिलोकत नै
नजीब भाषत कढवाऊं मारत काटूं हाथ हकन जो तु
मरापाऊं॥ रानी का राजा से दोहा॥ ✣ ॥

उस दिन का डर मुझे मेरी म्रत्यु होजाय॥
कैसे जीवैं ये कवंर तुम लो व्याह कराय

कड़ा तुम लो व्याह कराय रानी जनै कैसी आवै। ये मेरे कं
वरन दान गधइन कीना सुहावै। सौक चून की बुरी जहर
कवरौं कूं प्यावै। जो तुम राखो पास दोस घर कै मरवावै

राजा का रानी से दोहा

बैनो मेरे जिगर मैं बसत रूप बसंत।
भले सोच मैं तुम गई हेरानी गुनवंत॥

कड़ा हेरानी गुनवंत बात क्या पोछ बिचारी। कर कंव
रौं पै प्यार उमर है बहुत तुह्मारी॥ किन दीनी मत फेर ऐ
सी हिरदै से उपाई। आमग सोचन लगी तेरी क्या मत बौराई

रानी का राजा से दोहा

इस जिंदगी का एवजी तनक भरोसा नाह
एक पैर आधे धरो एक रहै घर मांह॥

कड़ा एक रहै घर मांह जिंदगी जग सुपना है॥ जूं कांटे
की ओस पवन चलने ढल जावै। देखत भूली ख्याल
भिरम जाता ना मन का। आवा गवन रही लाग भरोसा
नाइ इस दम का॥ राजा का रानी से दोहा॥ ॥

काहेकूं संसा करो रानी रहो निचिंत
और ब्याह करसैं नहीं जीवैं देख बसंत

कड़ा॥ जीवैं देख बसंत रूप जग मैं उजियारा॥ येने रहे दो कवंर एक से एक पियारा॥ निश्चै कर के जान सत्त हम तुम से कहते कपट हिये जिस माहिं उन्हों को जुग जुग दहते॥

रानी का राजा से दोहा

प्यारा धर्म तुम को फलो तुम जानो प्यारा काम
हम कोइ दिन की पाहुनी डंका बजे आठों जाम

कड़ा॥ डंका बजे आठों जाम विकट दिन का डर लागै॥ सब का छूटेन इन्साफ धर्म राजा के आगै॥ झूंठ बरा बर पाप नहीं हम तुम से सुनावैं हूंगी दावनगीर कवंर जो ये दुख पावैं॥ ॥

रंगाचार की रागनी

भई बेहाल अब रानी॥ बहुत बेमार की शानी॥ कवंरों को याद कर रोई मिला वे आन कर कोई॥ हुकम लेकास दौड़ाये। कचहरी मैं कवंर पाये॥ बिथा सब राव को सुनाई च लो तुम महलों के नाई॥ रंगाचार का दोहा ॥

कासद की सुन कर बिथा उठे जोरा बकराह
रानी देखी भुम्म पै पड़ी निराह निराह॥

कड़ा॥ पड़ी निराह निराह टूट सबसे मुख फेरा॥ कवंरों को बिन मात हुआ जग बीच अंधेरा॥ रोय रोय कर कहैं खड़े संग दोनों भ्राता॥ किस पर छोड़ी जाय कहैंगे किस कूं माता॥

दिवान का राजा से दोहा

सीस महल खाली पड़े हे राजा उमराव

बिन रानी शोभा नहीं कीजे कौन उपाव
कड़ा॥ कीजे कौन उपाय राव तुम हो अत ज्ञानी॥ सौमन कं रे उदास मिलैना वो अबरानी॥ जबसे रानी मरी रोसना मन सैं तारे॥ वहुतै दिना होगये राव कुछ आगम धारो॥ ॥
राजा का मंत्री से दोहा
रोस वहुत कासे कहूं वौंरं सके ना कोय
याद करे से मंतरी यो दुख दूना होय॥
कड़ा यो दुख दूना होय लगी तन प्रेम कटारी॥ निसदिन सालैं घाव हुई रोसी लह चारी॥ एक तो रानी मरी ए दूसरे यो दुख भारी॥ कवैरों का तरसा वे देख गई अक्कलसारी॥
दिवान का राजा से दो॰
रीन जगन की हो चुकी क्यों रहे सोच वढ़ाय
मरे फेर मिलैं नहीं कर लो कोट उपाय॥
कड़ा॥ कर लो कोट उपाय मिलैना वो अबरानी॥ कीजे और विवाह तजो राजा नैदानी॥ जितने दिन की लिखी उमर भुगतेगा सोई जीन जी का साथ संग ना जाना कोई॥
राजा का दिवान से दो॰
इसी वात का ना मन्तू मन ना लेय दिवान
रानी हम कूं दे मरी दूजे व्याह की आन
चौबोला॥ आन कान मरजाद है मैं करनी ना मिथ्या॥ कैसे पलटूं वचन बड़ी है इस की हित्या॥ एक हित्या सिर चढ़ै दूसरे यो डर लागे॥ कैसी रानी मिले आन कवैरों कू त्यागे॥
दिवान का राजा से दो॰

गये कौनसे सोच में राजा चतुर सुजान ॥
नाहं करो तुम व्याह कू क्या होगई खपगान॥

कड़ा क्या होगई खपगान अभी चरचै गेसारे। ऐसेरा
जा होय रहे तुम किसविध कोरे। ये कहने की बात
पड़ी कहे जाबो रानी। सौसौ अवला रहैं करो तुम बुद्धसियानी

रंगाचार का दोहा

कहां लौ बर्णन कीजिये कहूं छांटकर तंत ॥
व्याह राजा का होगया सोचत रूपबसंत

कड़ा सोचत रूपबसंत हुई ये कैसी बीरा। कहां हमारी
मात जिया नाधरताधीरा। यो कवरौ कैनभरैहैं नित्तपा
सपित्ता के एक दिन ऐसी हुई गये मंदर उसमाके ॥

रूपबसंत की भेट दोहा

जहां तुम्हारा आसरा बंका होय नाबाल
हमसूरस्व आधीन हैं करो मात प्रत पाल

कड़ा करो मात प्रतपाल तेरे हम दास कहावैं। मिच्छ
कहैं आधीन मात गुण भिला पावैं। आठ पहर तेरा ध्यान
नाव पै सब रसत्यागी। हमैं है निपट अधीन हिये में रटना लागी।

रंगाचार का दोहा॥

एक दिना बैठे कवर सोचत रूपबसंत
बैठो दिन करता नहीं खेलें जाय इकंत

कड़ा खेलें जाय इकंत दोनों ने धूम मचाई। मारा ऐसा घु
माय गैंद मंदर में आई। कवरौं की जो मात बांदी से अर्ज
सुनाई। लानूं गैंद उठाय बेग बांदी ले आई॥

रानीका दोहा

छत्रपतीपतराखियो कहै पुकारअधीन
दर्शआपकेकारनै दासरहै लौलीना

कड़ा दासरहै लौलीनमीनजैसेबिनपानी। दर्शनदोमहारा
जपड़ैहिरदेशतबानी। डारमुंडमजधारकहांनेरूपधि
पाया। जायवलीबिननावपांवलछुमन नटआया

रूपका बसंतसे दोहा

क्याखेलैहै खेलना बैठपरेमेरेयार ॥
सूधे टोलनामारता हमैंकोरहैखार ॥

कड़ा हमैंकोरहैखारबेलअनसहबगावै पड़ीमंदमैंजा
यकौन अबदूसकूलावै। अबक्यासोचेखड़ानुफेज
बनासूफीसी। लानूगेंदउठायमैंतोमेजूंगानुझे। ही ॥

बसंतका रूपसे दोहा

गुरूकूकैसेभेजना ऐसीऐंटना। होय
भ्राता अपनेपानकू बेसकजईयेऐय

कड़ा बेसकजईयेऐयपानजबतेरआवै। मेराहेदेपा
नकेहै कूपेचचलावै। मेराचाहियेपानगुलीपैगेदमेंगा
वै। ऐसाक्या अधेरबचननूरूठ गावै ॥

रूपका बसंतसे दो·

इसरचानरूठी कही जानीमनसुकचाय
कैसेजाऊं मंद्रमैं मौसीदेखरिसाय।

कड़ा मौसीदेखरिसायलजूसैंउनकेआगे। लगगई
होकधीगैर बड़ा डारउनकालागे लेमानाफानामहमैं

पनाम धरेगी॥ तुम को छोरा जान मा वैसी प्यार करेगी॥

वसंत का रूप से दोहा

जो तुम कूं डर लागता ले वीरा हम जायं
जो मौसी कछु कहैगी सुन चुप के हो जायं

कड़ा॥ सुन चुप के हो जायं कहैं ना मुख से हारी॥ इसका ना कुछ दोस धर्म की मान हमारी॥ उस माता से सरस मा वैसी कू हम जाने॥ प्रान होत लैं चरन कहै सो अज्ञा माने॥

रंगाचार का दोहा

छोड़ रूप कूं कवंरजी गये गेंद कूं लैंन
मौसी देखा आवता धरमुसकायेनैंन

चौबोला चला॥ धरमुसकायेनैन कवंर को देखा प्यारा॥ हिरदे पाप उदा रानी के सज्यो गवने सिंभाला॥ मंदमंद मुस्काय कही बांदी से पलंग उठाला॥ सेज्या दई बिछाय आन मंदर में इस कूं डाला॥ ऐसा जुल्म किया मौसी ने कवंर से न्यों उठ बोली॥ चलो सेज पे कंथ हमारी भोग करन कूं डाली॥

रानी का वसंत से दोहा

बहुत दिना में आज ही पड़े हमारे फंद
दर्श बिना में लोचती दोय जके से चंद

कड़ा दोयजके से चंद नहीं तुम दोहा दिखलाई॥ जू बिन चंद्र चकोर रहूं प्यारे दर्श पिसाई॥ तुम ऐसे निर्दई दया ना तुमको आवे॥ रहो हमारी सेज आज जाने नहिं पावे॥

वसंत का मौसी से दोहा

हे आन्यायण मावसी कहती नास रमाय
चंदृ पिता की सेज पे सभी धर्म घर जाय

कड़ा सभी धर्म घट जाय सेज पै जो पग धारूं ॥ चंद जा महा कलंक वचन क्रू कैसे टारूं ॥ रवैर कही सो कही जुबान अब चुप कीए रवो ॥ मैं नु मरा हूं पुत्र मात क्यों मिथ्या भावो

रानी का कवंर वसंत से दोहा

रहो हमारी सेज पै क्यों करते हो नाह
सो चतुराई कीजिये छाडूंगी नहिं बांह

कड़ा छाडूंगी नहिं बांह करो सो हुन्नर बाजी ॥ दोनो खेलेंगे हमे रमन कीयो राजी ॥ यानू करयो काम नहिं मैंने और उपाई ॥ कह राजा से तुझे दूंयगा दनमा रवाई ॥

वसंत का मौसी से दोहा

हे मौसी तू क्या कहै तन क नही सरमाय ॥ आोत्तेर मन यो वसी वेसकदे मर वाय ॥ कड़ा ॥
वेसक दे मर वाय कहे कूंद्रोह करे है ॥ सुन कर खोटे बचन मेरा आतजीव डरे है ॥ तेरा ना कुछ दोस हमै जब दोस रूठी थी ॥ छोड़ हमें नै दान हमारी मात मरी थी ॥

रंगाचार का दोहा

रानीने संग कवंर के बहुत चाहा हरिचंद
स्योभास उन की मान क्रू जिन जाये सतचंद

चौबोला चला ॥ जिं जाये सत चंदनों का वे कुंठै हो बासा ॥ जिन के ऐसे पुत्र जो जन्मै रहै ॥ कौन सी सांसा सज्जा गवन फिरी करने को दिया मावसी फांसा ॥ बां

हकुड़ा कर भागाली नो चोला फाड़ उनराला ॥ ॥

रूपका बसंत से दोहा

कैयो बीरा कैसी हुई रोवै जार बेजार।
नैनों मेंसे जल गिरे मौसी दियेलल्कार

कड़ा मौसी दियेलल्कार कही तुमको क्या भाई। कवल रहे मुरझाय रोवतेनैनो नो धाइ। क्या तुमगारी दई मावसीने-
अकमार। क्याना दई प्यारी गेंद हाल हमसे कहे सारा ॥

बसंत का रूपसे दोहा

कौन बिथा तुमसे कहूं मोसे कही ना जाय॥ ॥
कहत सुनत फारत हियें दिल मेरा घबराय

कड़ा दिल मेरा घबराय हुवे तुम आज बेदसी। मौसीने
एक बात कही है अचरज केसी। कहतों छाती फटै जैने
क्या मन पै धारी। कैंा सहते ये बात जो होती मात हमारी॥

रूपका बसंत से दोहा

माता कू मत याद कर तुम हो मेरे प्रान
वो ही तात वो ही मात है जिन दीनी ये जान

कड़ा जिन दीनी ये जान वही रिछ पाल करैंगे। कैंा कीना
अब सोच बिपत वे आप हरैंगे॥ नाहोना दलगीर होसब
कर कैं। घबराया। कहो आपना हाल रोवता कैसे आया

बसंत का रूपसे दोहा

इस खातर हम रोवते मौसी कहे कुबोल
सबद बान हिरदे लगे सीने मैं हुवे साल

कड़ा सीने मै हुवे साल मावसी के सुन बैना। उमगे दिल

दरयावरूरै भूरनासेनैंना॥ ऐसे बोलीबचन चंद्रोपत सेज हमारी ॥हाथजोड़ मैं कहा धर्मकी मानहमारी। फिरबो लागी कहन जानुरा नादखूता। बहां कुडामैं भगाची रलियाफाटकभेरा॥ रूपका बसंतसे दोहा ॥

भलेसोचमैं तुम गये सुनकै दीनारोय
हमीपिताके लाडले सब करेसो होय

कड़ा सबकैरसोहोय एकसे एकपियारा। उनसेनो उपर तकौन हमैं मारनहारा। जोराजा सिरधैरकहीपी जैसे- रानी है जननी दरकाररबेड़ना पीवें रानी॥ ॥

रंगाचारका दोहा ~~~~ ॥

बहुत प्रीतसे रूप ही रहा भ्रात समभाय
आसूपूछे हाथसे लीना कंठ लगाय

चौवाला चला। लीनाकंठलगाय कवंरजी सोचेवलमैं धा ये। अन्सनपाटीलेपड़ी रानी राजामंदर आये। चोला- काढहाथमैं दीना भूटइभूरसुनाये। कवरौंके मरनेके ल छन मौसीन करवाये॥

राजाका रानीसे दोहा

हे रानी तुम क्योंपड़ी क्यों मन किया उदास
किनतुम कूगारी दई जिसका है विसवास

चौबोला जिसका विसवासकिया इतना रानी। जल्दीतु महाल कहा मुखसे वानी। देखाभरनजरा किन्हीदीनी गारी जिसका अबसोसा किया इतना भारी। जिसकी न कसीर आज हम सुनलेंगे। राजौं की नीत करके निरदा

देंगे॥ रानी राजा से दोहा ॥

हे राजा मैं न्याय पड़ी सुनो तो कहूं विचार
व्याही हूं मैं आपकूं कंवर किये भरतार॥

कड़ा कंवर किये भरतार तो मैं उनके गर लागूं॥ हिरदे प्यारा नाम आज से सो मैं त्यागूं॥ तुमने ही कह दई हाय जो कंवरों से तीनों॥ उनही को पत गिनूं खैर मैं आप अर्चनी॥

राजा रानी से दोहा

सत्त वचन रानी कहो कराऊं न कीन कसीर
रासे नी वे है नहीं बोले वचन गंभीर ॥

चौबोला॥ बोले गंभीर वचन क्या मन ठानी॥ बैठी हो बात कहो बातर रानी॥ दिल पैसे तार मैं लदूर बगावो॥ कंवरों का फैल सभी मोहे सुनावो॥ जैसे तुम कहो नहीं कहनाडारे॥ बिना बूझ दोनों की गरदन मारे ॥

रानी का राजा से दोहा

जो राजाजी आपके नाआवेइत बार
बांदी मेरी है गवा यो देगी इजहार॥

कड़ा यो देगी इजहार जैसे कंवरों ने कीनी॥ कहद कार सो टीं बात मेरी वो यांगह लीनी॥ जब मैं लागी कहन करे है क्या अन्याई॥ बहुत लिया समझाय ख्तान में एक ना आई॥ कार मेरे संग करत कहो मैं कैसे जीऊं॥ जो तुम राखो कंवर जहर का प्याला पीऊं॥ ॥ ॥

एग चार का दोहा

राजा सुनकर चुप हुवे आपाना इतमार

पहिलीरानीरावनें उसदिन कीनीयाद

चौबोला चल्त॥ उस दिनकीनीयाद वदनमें उठी जो भभक ख्याला॥ साँची बात कहै यो रानी जो हो जागा। काला और ख्याल तुमम नना की जो कैसी आवे वाला झूठा दोस दिया कँवरोंको मौसीनें घर घाला॥

राजारानीसे दोहा

खैर खुशीसेतुम रहो कहना हमें मंजूर
कँवरोंकूमरवायदें हो चाहे नाहिं कसूर

कड़ा॥ हो चाहे नाहिं कसूर आज सुनमनसे त्यागे॥ सुनकर खोटी बात दाग हमरे मन लागे॥ हमतुमसे नाजु हैं जो तुम कोऐसी भाई॥ दोनो रूपवसंत इन्हें डारूं मरवाई

रंगाचारकादोहा

तिर्याकी तरकीपको जानसके ना कोय
पहिले मारेपुरुषको पाछे सत्तीहोय॥

कड़ा॥ पाछे सत्ती होय अजब तिरियाकीमाया॥ जिनझूठा महाराज कवँरों को दोस लगाया॥ ऐसी मौसीमरो पिता सुत का मन फाड़ा॥ कवँरों ऊपर जाल जिन्हें मरने का डारा राजा होगये मूढ़ सीख तिरिया की मानी॥ तुरत कचहड़ी जोड़ कही मंत्रीसे वानी॥ ॥ ॥ ॥

राजाकादिवानसेदोहा

हे दिवान जल्लाद कूं हाजर वेग बुलाय॥
ये जो रूपवसंत हैं इनको दो मरवाय॥

कड़ा इनको दो मरवाय हुक्म हम तुम को दीना॥ इनका वँ

रैंने आज का म राक खोटा कीना ॥ इन दुष्टों को जाय आ
प जल्दी मरवाना ॥ दर्शन सें व जां रमेरे आंघे मत लाना ॥

मंत्री राजा से दोहा

हे राजा तुम चतुर हो कैं गया चित बौराय
कौन भलाई देयगा कंवरों को मरवाय।

कड़ा कवरों को मरवाय हंसे गा नगर सारा। तुम से पीछे
कौन राज का करने हारा। एक दफे तकसीर माफ इनकी
कर डारो। दीजे देस त्याग इन्हे मत गरदन मारो ॥

रंगाचार का दोहा

राजा कू समझाय के उठे दिवान कराह ॥
कवरों से कही जाय के हर के हाथ निवाह

कड़ा हर के हाथ निवाह लिखा करमों का पावे। तुम को
देस त्याग आज राजा फरमावे। ह्या से अब जल्द वद
इ चाहे मितर तेरा ॥ बारे वर्ष बदीत कीजियो फिर तुम
फेरा ॥ इतनी सुन के रूपमंत्री से बोला बानी ॥ ले बीरा
होन्यार रखे मत पीवो पानी ॥

बसंत का रूपे से दोहा

हे वीरा कैसी हुई दिये पिता ने त्याग
जब से माता जी मरीं लगे दाग पर दाग

कड़ा लगे दाग पर दाग मरी जब से महतारी। दूजे हम कू
आज दिसौटा है अत भारी। एक दिन हम कूं देख देख
जीवे थे राजा। अब मन से दिये त्याग नहीं ह्यां रहना लाजा

रूप का बसंत से दोहा

क्यौंरोवैहै भ्रातजी राम करैसो होय ॥
जोकरमोंमैंलिखदियामिटसकैनाकोय

कड़ामिटसकेनाकोयलिखीजोकर्महमारे। विधना ब
चनअचल्लभरी आखौंकेतारे। जोराजाहमतजेंत
जोमनएकंकारा। कैसीविपतापड़ाकैरंगेवे निस्तारा॥

बसंत कारूप सेदो·

एक दिन राजादेखकै हमैंधरैंथेधीर ॥
आजदिसोटादैथा बिनागुनातकसीर

कड़ा बिना गुनातकसीर पिताजीकैसे त्यागे। हमतुमदे
नोचलें कहँगेउनके आगे। नाहमचोरीकरी किसीकेदिय
नाडाँका। किसबिधराजाअंजल वंदकरैहैह्यांका॥

रूपबसंतकादोहा

ह्यांकाअंजलवंदहै करैंनहींजलपान
हमकूकरनेचाहियें पितावचनपरमान

कड़ा पिता वचनपरमानकरो आगेपगधारो। एव करी
सोकरीधर्ममनअपना हारो॥ तिरलोकीकेनाथजिनौंकी
बसुधासारी। हमतोहैं एकपशूहुंवहैं वेबनवारी ॥

बसंतकारूपसेदोहा

हेभ्राताएकबातका मुझकूवड़ाविरोग
सभीबटेऊहोगये इसनगरीके लोग॥

कड़ाइसनगरीकेलोगजोनप्पेबडेपियारे। नाकोईदोरजध
रेविछडगयेहमसेसारे। धन्यधनीकोख्यालअजवहैउ
नकीमाया॥ थोडेदिनकेबीचहमें यो त्रासदिखाया॥

रूप वसंत की रागनी

क्यों हम को मरवावे ॥ रूप वसंत तो हाय जो इने तुझे दया नहीं आवे ॥ तड़फ तड़फ नाहक मर जांगे फेर कवर कहां पावे ॥ मौसी क्यों हमको मरवावे ॥ ॥

रूप का दोहा

इसी ख्याल कूं देख के गया होस सब भूल
जान इस तक दीर में क्या क्या लिखा दुख मूल

कड़ा ॥ क्या क्या लिखा दुख भूल अभी क्या देख लई है ॥ सब ही भरनी पड़े बिपत जो आर रही है ॥ जो करमों मे भी रखकोई कर सैन ही राजा ॥ जो लिख दीना राज रहो गही परसाजा ॥

रंगाचार का दोहा

बहुत प्रीत से रूप ही रहा ध्यान समझाय
दिल वसंत का इस तरे दीना ग्यान दृढ़ाय

कड़ा दीना ज्ञान दृढ़ाय चले दोनों संग भाई ॥ देखे सारा नग्र रोवते नैनो धाई ॥ जो सौवत के लोग जोन ये बड़े पियारे ॥ सब राजा को कहैं दूर न्यानत के मारे ॥ ॥

रूप का दोहा ॥

सब यारों को राम राम क्यों करते हो रोस
कर्म लिखा मिटता नहीं राजा का ना दोस

कड़ा ॥ राजा का ना दोस करे सो कर्म हमारा ॥ सब फिर जा मो बार खुशी रहो नग्र सारा ॥ जो हम जिंदे हैं आन का फेर मिलेंगे ॥ अब राजा के बचन सभी पर मान करेंगे ॥

रंगाचार की रागनी

तातने दिया दिसोटा भारी ॥ टेक ॥ जार जार रोवें देउ भ्रा तानीर नैनों से जारी ॥ कवर कहैं विपता क्यों भरते जो होती महतारी ॥ तातने० ॥ बहुत सोग नगरी में छाया रोवन सब नर नारी ॥ दुष्ट राजा न्याव नके मोर कहवे दुनिया सारी ॥ तातने० ॥ ननक तरस कीना नहिं राजा पुत्र उमर है बारी ॥ यर्थ नार के वस्स में होके गई अकिल सब मारी ॥ तातने० ॥ मौसी उस विपत में उनको मगन हुई हत्यारी ॥ हरदेव कहै माता के मरन से हुई अमरलदचारी ॥ तातने दिया दिया दिसोटा भारी ॥

रंगाचार का दोहा

तज नगरी कूं कवर जी चले चलत भई शाम
एक दरख्त के आसरम जाय किया विसराम

कड़ा ॥ जाय किया विसराम व्याप दिल रही उदासी ॥ सा रस केसी जोड़ी हुवें जंगल के वासी ॥ क्या उच्चारन करूं हाय अन्याई राजा ॥ ऐसे सुत दिये त्याग जिन्ह तनिया के काजा ॥

वसंत का रूपसे दोहा

दुस्त नरियों से भ्रात जी रैन गवन नहीं होय
पहिले पहरे हम जगें अब तुम रहियो सोय

कड़ा ॥ अब तुम रहियो सोय भ्रात हम पहरा देंगे ॥ आधी रात नवदीत जगा फिर तुम को लेंगे ॥ हम निर्भय ऊंकार नाम पर डरना हिं तन्सी ॥ त्यागो दिल्से क्रोध नहीं कुछ हम कूं संसा

रंगाचार का दोहा

रूप नींद के वस हुवे जगे कवर वसंत

आपसमैं दो जानवर चर्चा रहे करंत

कड़ा चर्चा रहे करंत कहूं एक मुख से मैना ॥ एक सुवा पर वीन दूसरी थी जो मैना ॥ सूवे ने न्यौं कहा मेरा जो भोग लगावै ॥ जो चाहै भगवान राजकी गद्दी पावै ॥ फिर मैंना ने कहा मेरा तन करे अहारा ॥ नित उगलै वो लाल चाहै जो रा के कारा ॥ इतनी सुनी बसंत मार दोनों को ल्हीना ॥ मैना खाई आप रूप को तोता दीना ॥

बसंत का रूप से दोहा

आधी निसतो होगई देवाराजू जाग ॥

अब तुम पहरा दीजयो हमैं नीद रही लाग

कड़ा हमैं नीद रहि लाग ख्याल कर कै सुन लेना दूर गई हैरान खोल कर देखो नैना ॥ खुध्यावत शरीर है थे तो भोग लगावो ॥ हम लेलें एक नींद फजर होतो उठ धावो ॥

रंगाचार का दोहा

सकल सभा सब ही सुनो पिछला कहूं ख्याल

वर्णन कहालों कीजिये यही सदा की चाल ॥

कड़ा यही सदा की चाल कथैं राजों के साके ॥ जैसे रूप बसंत पड़े भारे बिपता के ॥ कहांलौ बर्णन करूं रूप का पहरा आया ॥ आय अचानक सर्प कबर चौरा चट खाया ॥ निकसत आये भान रूप कर सैं टोना वै ॥ जो जागे दोभ बसंत तो उठ कर बोल सुनावै ॥

रूप का बसंत से दोहा

हे वीरा तुम कहां गये हमैं अकेला त्याग

मातपिताके हमतजे लगी तुम्हारा दाग

कड़ा लगा तुम्हारा दाग आन कहां छोड़ें जावो ॥ किस विध जीवन होय मुझे तुम संग लगावो ॥ इस वनके मजधार आन हमसे छल कीना ॥ एक दफे तो बोल फेर केसे मुख लीना ॥ मैं तुमको बिन देख करूं ना अन्न अधारे ॥ हाहा बीर बसंत दगा दे कहां सिधारे ॥

मिसरशहर के सिपाही की भेट

भला भवानीजी करो मात मेरी प्रतपाल

सुख संपत दायक भक्तपर सो वरदो तत्काल

कड़ा सो वरदो तत्काल मात तुमसे बर मागे ॥ लालनकी प्रतिपाल हाल कीनी है आगे ॥ लाल लाल लंगूर लाल ही धुजा फहरानी ॥ भरवन तन सब लाल कहूं सुखसे भवानी

रंगा चारका दोहा

मिसर शहर में राव का कहै हुकम सब कोय

ऐसे राजा कहमरे उसको गद्दी होय ॥

कड़ा उसको गद्दी होय वहां से ये पिरथम आवै ॥ ऐसी करनी हुई रूप ह्वां आन उपावै ॥ अब बीरा ना मिले करूं सो सो चतुराई ॥ कफन लेगत करूं रूपने यो ठहराई ॥ ये मन सोची रूप मिसरको वेग सिधारे ॥ ह्वां राजा परलोक होय गये सब संन्यारे ॥ दरवाजेसे बाहर ह्वां सराजाकी आई पहिले पहुंचे रूप सि कलसबके मन भाई ॥

सिपाही का रूपसे दोहा

हेलड़ केद कढ हीरये सुनना जाएक बात

आगे पग मत नाधरो यह तुम से फ़रमान
चौबोला चलता ॥ ये तुम से फ़रमान मुसाफ़र आगे पग मत
दीजे ॥ तेरे हक में भली कहूं हूं सुन के उत्तर दीजे ॥ ऐवादी
बात जरा नहिं कहता अर्ज मेरी सुन लीजे ॥ भाई बंद
की तरह कहूं हूं अब तक नहीं पसीजे ॥ ॥ ॥

रूप का सिपाही से दोहा

राह चले हम जानते हैं नहीं किया बदफेल
ना हमने चोरी करी क्यों रोके है गैल ॥

कड़ा क्यों रोके है गैल तैंने दिल क्या ठहराई ॥ ना हो सल
वे पीर ऐक ना मूरख बताई ॥ क्रोध अगन के दर्फ चले हम
मारग जाने ॥ ना तुमरा कुछ लिया कहो अब क्या फ़रमाने

सिपाही का रूप से दो॰

यह फरमाने हैं तुम्हें मन मत करो उदास
राजा ऐसे कह मरे जब तुम काटो ल्हास

चौबोला चला ॥ जब तुम काटो ल्हास शख्स जो प्रथम
आगे आवे ॥ तिलक राज का कर दीजो ना हर गिज़ जा
ने पावे ॥ इस खातर रोका हम तुझको ना हक सोच बढ़ा
वे ॥ भाई बंद से चल पड़ तू क्यों खोटे बचन कहावे ॥

रूप का सिपाही से दोहा

किस खातर रोका कहो क्या मेरी तकसीर
ना हमने चोरी करी क्यों रोको बेपीर ॥

कड़ा क्यों रोको बेपीर किसी का मर्म ना जाना ॥ क्रोध अ
गन के दग्ध लगे है बागी बाना ॥ एक तो माता मरी पिता ने नग्र

छुड़ाया॥ तीजे वीर वसंत आजा विसपरने खाया॥ ले नग रीसे थ्यान में उस्की गत कर आऊं॥ फिर जो तुम कुछ कहो हुकम तुमरा बर जाऊं॥

रंगाचार का दोहा

सुन कर इतनी बात कूं पकड़ सिपाही हाथ
धक्के दे आगे किया हुआ सिपाही साथ

कड़ा॥ हुवा सिपाही साथ रूपगढ़ी वै हाथा॥ मिलर सा के बीच आन कै रोवक हाथा॥ राजन सेमें आय भूलगया सव चतुराई॥ कहां गया वीर वसंत नहीं इतनी सुध पाई॥ आये पास वसंत कवर के हां दो प्रानी॥ एक जोगी महाराज दूसरी थी जुगियानी॥ पारवती का महादेव से दोहा

जोगी तुम तन ठहरियो सुनो वात कर नेह
मेरी एक मुराद है किस विध आद मदेह

कड़ा॥ किस विध आदम देह पड़ा वन के मंज धारी॥ क्या कुछ ऐसी विपत पड़ी है इसपै भारी॥ इसकूं देहो उठाय जभी मैं संग चलूंगी॥ नातर तो महाराज मैं इसके पास रहूंगी॥ किस माता का पुत्र सिंह या सांप सताया॥ वन में इस्का फैन पड़ी है रूठी काया॥ रंगाचार का दोहा ॥

जोगी ने उत्तर दिया तुम कूं नहीं विचार
कोई दुखी कोई है सुखी परजा के मंजधार

कड़ा॥ परजा के मंजधार कोई रोवै कोई गावै॥ त्रिया न कछु बुध जान भुफ़त की राड़ लगावै॥ इतनी सुनके बात फेर बोली जुगियानी॥ नहीं हमारा धर्म जिये विन पीवें पानी

तव तो गौनेबूंद मुखमैं इमरत की डाली ॥ हरहर करते
उठकरके बैठे खुशियाली ॥ बसंतका दोहा ॥

रूपनहीं नजरैं पड़े कहा वठी भगवान।
हम छोड़े बनके बिषे कहांगये चत्रसुजान

कुड़ा कहां गये चत्रसुजान हमैं तजके बनमाहीं। कौ
नैं बंधावै धीर सगा कोई अपना नाहीं। क्या मनपै लदे
दान दियेक्या बेरे दिखाई। हमको सोता छोड़ आपने स्य
न छिपाई। ऐसीजीमैं उठे मूड धरनी दे मारूं। लगे दाग पर
दाग चोट वे नहीं सहारूं॥ जोगीका दोहा ॥

कैौं रे बालक बावरे रोवै नौ नौ धाय ॥
कौन बिपत तुझ पर पड़ी हमकूं देबतलाय

कड़ा हमकूं देबतलाय कौन बिपता ने घेरा ॥ कौन दिसा
कू जाय कहां से आवन तेरा ॥ कौन तुम्हारा ग्राम नाम ह
म से तो कहना ॥ मत कलपै नादाना निसा रखा तर सेरह
ना ॥ और बिपन क्या चीज मेरे कू तुझे जिलाया ॥ भलीक
रेंगे राम कहे कू सोच बढाया ॥ बसंतका दोहा ॥

प्रथम तो माता मरी हमकूं छोड़ नदान
मौसी कू लागे बुरे बोला रूठ तुफान ॥

कड़ा बोला रूठ तुफान बान कही राजा से तो ॥ दिया ह
मैं कढ़ वाय कहूं जो विपता केती ॥ इस विपता के
मारे पड़े हम दोनो भाई ॥ ह्यां बन के मझधार आन
कै रैन गवांई ॥ उसकू दिया सुवाय फेर मैं बी हूं सोया ॥ जानै
प्रात रूप गया औ किस बिध रोया ॥ जोगी रूपसे दोहा

होनी थी सो होगई मत दिल करे उदास
कर्म लिखी मिटती नहीं अब क्या है बिस्वास

चौबोला क्या है बिसवास तजो चिंता सारी ॥ कर्मों की रेख नहीं टरती टारी ॥ जोगी बर दीना है तुं को आ जा ॥ पूरन हो जायँ तेरे मन के काजा ॥ ऐसे मत रोस करे इत ना प्यारे ॥ लैंगे सुध आय तेरी बसी बारे ॥

बसंत का जोगन से दो॰

हे माता कैसे जिऊं रूप दर्शना देय
बेतो मेरे प्रान हैं लागी लगन सनेह

कड़ा लागी लगन सनेह कहो मैं कैसे जीऊं ॥ यह अबे दिल बीच जहर का प्याला पीऊं ॥ कहो आफ तुम मात भला अब कैसे कीजे ॥ मेरे प्रान कूं लाय कहीं से दर्शन दीजे ॥ इस बन के मजधार आन के बिछड़ न कीना ॥ लोचूं हूं बिन रूप जैसे मैं जल बिन मीना ॥ दो॰

जोगी ने पुच कार के लीना साथ बसंत
चेला करके ले गया चाही कोर लिखंत

चल्ली सी ताल ॥ चाही कोर लिखंत भाग में लिकखी कलम करारी ॥ तीन लोक के हरतम करता उनसे टरे ना टारी दोनो का हो गया बिछोहा रोसी हुई लचारी । रहे पास जोगी के एक दिन ऐसी बात बिचारी ॥ तीन खूंट की सैर करी चौपी की मन पै धारी ॥ चाही कोर लि॰ भा॰ ॥ महादेव दोहा

हे बच्चा आनंद रहु ना हो नी दलगीर
तेरे ऊपर दुख पड़े हर बांधेंगे धीर ॥

कड़ा॥ हरवांधैंगेधीर काज जो मनपैधारै॥ सोई सिद्ध हो होजाय दहरीजोनूउभ्वोर॥ श्रारव खोलमूफेर फेरवोक्या कछजाहै॥ ऐसे कहकरछिपे कवंरहमेरे नटक्याहै ॥

एगाचारकादोहा

पश्पनिकेसुनकरवचन फेरामूरववसंन
होश्रलोपपर्शिंमूरहै वाढासोच श्रनंत ॥

कड़ा॥ वाढासोच श्रनंत कवौंफिरते वोरारा॥ कोई धीर नाधरे॥ कवंल नोके मुरझाये॥ एसी विपता पड़ी ईनेये स्यालदिरवाये॥ होती श्राई श्याम मिसरदरवाजे श्राये

सिपाहीकादोहा

हैरे मुसाफरकौनहै मत श्रागेरखपाय
योदरवाजांबंदहै तू श्रागेकहां जाय ॥

कड़ा तू श्रागे कहांजाय हमैंदीजेवनलाई॥ श्रांखखोल करदेखरानश्रवकितनीश्राई॥ राजाकाहैहुकमरातका मीसमभारी॥ जोतुमकोहूं जान नहींकछतावहमारे श्राजकहींविसरामजायके श्रोरहांकीजे॥ श्रगरकाम जोहोयसुवह श्राकरसुधलीजे॥ वसंतकादो· ॥

नाडाफूनागढकरे नहीं चोरनहिंजार
विनागुनारेका मुझे इस्का कौनविचार

कड़ा॥ इस्का कौनविचार राकमारग मैंलीना॥ राजा केश्रं धेर हुकमजोऐसादीना॥ जोजाने नहिंदेय कहांविस रामकरैंगे॥ फजरहोत उठजायें तेरपकुछनहींहरेंगे॥

मिसर राहुके सिपाहीकावसंनसेदो·

भगजा। ह्यांसे वावरे क्यों आयातेरा काल
सेर लगे है दूसजगे करदेगा वेहाल॥

कड़ा करदेगा वेहाल तुजा क्यों हुआ दिवाना। कितने
ही हत दिये सिंह वो है वलवाना। लेगा गुरु को मारचला
जा ह्यांसे प्यारा। हमरा दोस वेदोस नेरा जो काल पुकारा

वसंतका सिपाहीसे दोहा

जो किसमतमें लिख दिया मेट सके ना कोय
विधना वचन अचल्ल है सभी भुगतने होय

कड़ा सभी भुगतना होय लिखा जो कर्म हमारे। जो आ
पहुंचा काल वचें ना तुमसे प्यारे॥ हिरदे उस्का नाम नहीं
कोई मारनहारा। जनकी रिच्छा करी जाय प्रहलाद उवारा

सिपाहीका वसंतसे दो·

राजा का ये हुक्म है कहूं मैं तुमसे फेर
मिलसे वहुत इनाम ही जो कोइ मारे शेर

कड़ा जो कोई मारे शेर होय ह्यां वड़ी वड़ाई। मिलसे वहु
त इनाम और हो रैयत हिरखाई। जान ह्यांसे भाग चाहिं जो
जानवचाना। हत लेवेगा सिंह यों ही क्यों होय नदाना॥

वसंतका सिपाहीसे दो·

जो करताने लिख दिया नहीं टलेगा लेख
जहां इसने वीसों हते हौं मैं वीसई एक॥

कड़ा हौं मैं वीसई एक यहीं विसराम करूंगा। दरवाजे के
द्वार रैनभर पड़ा रहूंगा॥ जो किसमतमें लिखा सिंह भक्षन
कर जावे। लाख करूं तदवीर रामविन कौन वचावे॥

रंगाचार कादोहा

कहाँ लग मैं वर्णन करूं इसे नींद गई आय
पर कछु प्रथ्वी खोदके चादर दई बिछाय

चौबोला। दीनी दई बिछाय लिखा ले खसिकंदर। आया जो सिंह गिरा उसके अंदर। सुन कर आवाज नींद उठ कर ध्याया। मारा शम्शेर जीव कीना न्यारा। नाक और रन रब कान पूछ कर के न्यारी। आइ कछु समझ जे वअपनी डारी। बीती सब रैन भान निकसन आया। जो था कुतवाल पास तिसके धाया॥ कुतवाल का दोहा

सिंह बली किसने हना कहो मुसाफर बात
सांच सांच बतलाबेत नहीं करूंगा घात

कड़ा नहीं करूंगा घात बात मुझसे करु सारी। हूं गर वाल उड़ाय मुसाफर सुनो तुम्हारी। बहुत दिनों में आज सिंह यो किसने मारा। जा राजा से मैं इनाम लूंगा अत भारा

रंगाचार कादोहा

बहुत भार धम कायके कीना कैद बसंत
राजा से जाकर कहा मारा सिंह बलवंत

कड़ा मारा सिंह बलवंत मैंने जाकर कै आजा। दीजे मुझे इनाम कही राजन महाराजा। राजा ने इनआम बहुत सा उसे दिलाया। इतने में मन्हा राजरा के सौदागर आया॥

सौदागर का राजा से दो·

मैं सौदागर दूर का अरका मेरा जहाज
बरदाजे भेट कूं सुनो राज महाराजे॥

कड़ा। सुनोराज महाराज भेद कू बरदादीजे। मैंहूं तुमरा दास काम यो मेरा कीजे। पुस्तौसे दस्तूर आपने करी सहाई। जैसा आदम मिले दोय मुझको मंगका वाई ॥

राजारूप का कुतवाल सेंदो·

ये सौदागर दूलाका करी पुस्तकी चाल
आदम दीजे भेदको सुनो हुकम कुतवाल

चौबोला। सुनिये कुतवाल कोई बरदा लाओ। लेकर के जल्द उसे भेद दिलाओ। ढूंढ कैल बारस कोई बरदा दीजे दोनों दिदेर इनेरुकसद कीजे ॥ ॥ ॥

कुतवाल का दोहा

एक शख्स मैं कैद मैं किया वाहर दरबार
लेजा ओ तुम भेदको पकड़ आदमी चार

कड़ा पकड़ आदमी चार उसे अब हीं लेजावो। दोनों ही सो होय आफ तुम काम बनाओ। रिसवत कादस्तूर हमेसा पूरा कीजे। फिर आदम महाराज भेद सिंधको दीजे

बसंत का सौदागर से दो·

है सौदागर आपसे कहूं जोड़कर हाथ
कहां पकड़ कर ले चले मुझे बता ओ बात

कड़ा मुझे बता ओ बात आपने क्या यो बिचारी। नैयां सस्ति ये बात जो होती भानद मारी। तातमात और भ्रात सभीने कीना न्यारा। कहां पकड़ ले चले हाल बतला ओ सारा

सौदागर का बसंत से

हम सौदागर पस्तके जबहारु केजहाज

एकआदमी गैरकू देनराजमहाराज
कड़ा देनराज महाराज सोई अवकै तूदीना। लाखकरे नन्वीस तेरा ना होनाजीना॥ क्योंरो नाहे खड़ा सोचसे कुछ नहिहोना। कोई छिनपलके माहि सिंधु मैं दू हूं गोता॥

वसंत का सौदागर से दोहा

जो जहाज ये चल पड़े होय तुम्हारा काम
तौ तुम मुझ को छोड़दो या मारोगे जान

कड़ा या मारोगे जान कहो तुम मुझसे भाई। क्या मेरे करतार करम्में लिखीनवाई॥ जो होराम सहाय चले जाहजतुम्हारा॥ तौ तुम मेरी जान बकसदी जैगा प्यारा॥

सौदागर का वसंत से दोहा

जो जहाज मेरा चले सांचीकर कै जान
सब धन का मालिक करूं रखूं पुत्र समान

कड़ा रखूं पुत्र समान कोई कीजे उस तादी। ह्यां से चले जहाज करूं फिर तुम री शादी॥ सुंदर अबला साथ व्याह तेरा करवाऊं। तुही धर्म का पुत्र री मैं पिता कहाऊं॥

रंगाचार का दोहा

शिव शंकर को याद कर दीना पैर फुवाय
करता की किरपा भई दिया जहाज चलाय

कौवोला॥ चाला जाहाज दयारवने कीनी। रखो धन-माल कबें अन्नादीनी॥ आगे एक नगर निकट आय जहाजा अनतही गुणवंत नगर उसका राजा॥ तिसकी नारी फ़करे नगरी सारी॥ कन्या अति रूपवंत उसके

वारी॥ होनी बलवान हुई तिससे शादी। रहैव आनंद कै वर और शहज़ादी॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वसंत का शहजादी से दो॰

हे शहज़ादी आपसे कहूं एक मैं बात
बहुत दिना रहने हुआ चलो हमारे साथ

कड़ा चलो हमारे साथ बहुत दिन रहते बीत। होय जहाज सवार कौं फिर मन के चीते। अब हम ने लिहा जहर सैं सब लोग लुगाई। बदनामी की बात सुसर घर रहै जवांई

शहजादी का वसंत से दोहा॥

जो तुमरे मन ये बसी मेरी नहीं बसाय
रुकसद लीजे मांग तुम पिता मेरे पै जाय

कड़ा मुरु सनी क्या कहो। पिता मेरे पै जाओ। दो जहाज लदवाय प्रथम तुम आज्ञा लाओ। मैं तुम से क्या कहूं पिता के है अखत्यारी। लीने फेरे साथ मैं ता हूं वास तुम्हारी॥

वसंत का राजा से दोहा

अब रुकसद कर दीजिये लीजे नाहक देर
जो जहाज ल्याऊं कभी हाजिर हूंगा फेर॥

कड़ा हाजिर हूंगा फेर बिदा अब हमको कीजे। सुनो राज महाराज दया कर आज्ञा दीजे। रहे सो चार दिन रैन चैन नहिं है एक पल को। महरा है दरियाव पार करता हूं जल को॥

राजा चौर का दोहा

सुन बसंत के यह वचन राजा चतुर सुजान
फिर बिदा कर दीजिये मैं मन लीनी ठान॥

॥ चौबोला ॥ लीनी मन ठान इने रुकसत कीना ॥ ब्याह
कादैज बहुत उन को दीना ॥ ले कर संग नार चले उस्के घर
को ॥ रहेन आनंद मगन भजने हर को ॥

ऐंगाचार का दूसरा दोहा

शाहजादी से सब बिथा कहै जो गुजरी अंत
तात मात और भ्रात की बिपता रोज बसंत।

चौबोला ॥ बिपता सब रोज सुने उस्की रानी ॥ निज निज
कह कंथ दोऊ भ्रात कहानी ॥ सौदागर नारि देख बेईमान
हीना । कवंर को समंद्र बीच धक्का दीना ॥ जिस्को राखे रा
म मार को नहि सक्का ॥ डूबत ही हाथ एक आया तख्ता ॥
तिस पर ही बैठ गया मिस्र शहर मैं ॥ माली ने पुत्र स-
मझ राखा घर मैं ॥ " " " " " ॥ ॥

सौदागर का शाहजादी से दोहा

शाहजादी पत आपका गिर कै मुआ बसंत
अब एवज कर मानिये मुझ को अपना कंथ

कड़ा अपना कर कै कंथ जानियो अब तुम हम को ॥
रहो खुशी से आप छोड़ दो उसके गम को ॥ तुम को है अब स
त्यार मेरा ये माल खजाना ॥ जो दुनि सै गया ख्याल उस्का
क्या लाना ॥ शाहजादी का सौदागर से दोहा ॥

सुन मूरख मत हीन तू कहै बात बौरान
एक बर्ष के वासते पुत्री कर कै मान

चौबोला ॥ पुत्री का मान पाप तैं ने कीना ॥ पिया को समं
द्र बीच ध[illegible]ना ॥ तड़फूं दिन रैन भावे अन ना पानी ॥

किससेतीसुनूदौभ्रात कहानी॥०॥ ०॥ ०॥०॥०॥

रंगचारकोरोद

सौदागर जब सुन चुका शाहजादी की बात
मिसर शहर के राव को दई इसे सौगात॥

कड़ा दई इसे सौगात रूप की बांदी प्यारी॥ एकदिन मन की विथा राव ने पूछी सारी॥ शाहजादी ने कहा सुनू दो भ्रात कहानी॥ तब ही मैं महाराज रखाऊं गी पटरानी

दूसरा रंगचार का वचन

राजा सुन कर ये वचन गया हेफ में आय
सब कूंचे बाजार में डौंडी दी पिटवाय॥

कड़ा डौंडी दी पिटवाय कहै जो भ्रात कहानी॥ पावे बहुत इनाम सुने राजा औ रानी॥ जहांपा कवँर बसंत खबर मालन कै आई॥ लालच कर कै चली और कीनी चतुराई॥ कीना जभी बसंत कवर का भेस जनाना॥ बेटी है ये मेरी राव से किया बहाना॥ दो भ्रातों की बात सुनो अब चित्त लगाई॥ मालनने ये कहा बहुत इन मुझे सुनाई॥

(रागनी बसंत की जनाने रूप में भ्रात औ शाहजादी से)

रानी सुनिये मेरी कहानी। खड्गसैन के रूप बसंता ये दोनो पे प्यानी। बालापन्नैं छोड़ कै इनकं ... गई मात निमानी। रानी सु० दूजा ब्याह राव ने कीना ... ई विरानी। लेकर गेंद गये खेलन को पड़ी मंद्र में ... मि० उरता स... गया गेंद लेनको मौसी देख रिस्यानी ... में ... आज कही है वाकी कल्ह सुनानी। रा० न... ीनी ... ोट कर

नों को कहा कवँर नामानी।। मरने का। फिर हुकम दिया यावो
लाइँ सनु फानी। एनी०। मंत्रीने समझाया राव कू कही एक अन
वानी। देमिरेसा त्याग इनोंको नाफाँसी लगवानी। एनी०। एक
कुत्तै पेनोने मैना बोलें मीठी बानी। मैना खाय लाल थे उगले
सुआ खाय रजधानी। एनी०। एक आन विसियने पाय जिला
दिया जुगियानी। रूपराव को मिसर देश की आय हुई रजधानी
। एनी०। वसंत मिसर दरवाजे आभे मार सिंहवलवानी। कोन
वा लने खेर खाहवन करी आन बेईमानी। एनी०। सौदागर
ने बरदा मोंगा दिया उसे मरवानी। जब करताने किरपा की
नी झों भी जान बचानी। एनी०।। दो० दुर्गेने कीनी दया
दुआ सोंग सब अंन। गल बैयां गल डारके मिल गये रूप वसं
तो रूप और वसंत मिले दोनो भाई। नगरी में मगन हुए लो
ग लुगाई। और काई नाम औरा रिसवन रवाई। आया कुन वा
लन भी फांसी पाई। एक दिन कवँर यही ठानी मन को। लेकर
संग फौज चले तात मिलन को। मात और पिता उरे आन
न में। दोनो ये पुत्र गिरजा चरनन में।। बकलम हरदेव सिंह

दोहा।। कूँचा मेरठ शहर में बनियो पाड़ा जान।
नहाँ विप्र हरदेव सिरू करता है गुजरान।

इश्तिहार

सबमीद तिमिमानम ... लूम
... कियहा किनावरे ... संत
... लसनासिं ... पंडित
हरदेवा ... ज़ाज़त
दुनकीन ... दी ... जल्द

اطلاع
ہماری بدون اجازت کے کوئی قصد چھاپنے کا
نکرے + العبد
ہردیو